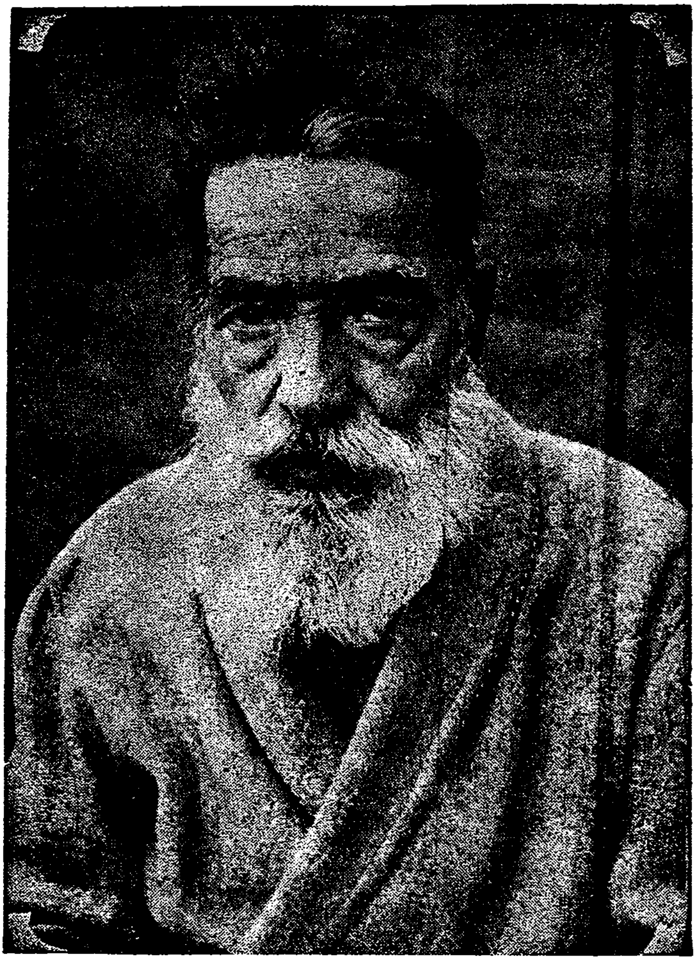

परमसन्त, परमदाल
फकीर चन्द जी महाराज

मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :—एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ६	बुद्धवार १० अक्तूबर १९७९	सँख्या ६

गुरु पूर्णिमा अथवा गुरु का पूरा हित

सत्संग हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक 8-7-79

देखा देखा देखा

अगम अगोचर रूप गुरू का, गुरू की दया से देखा।
नहीं अनेक और एक नहीं है, नहीं वह ज्ञान विवेक नहीं है।
पक्ष नहीं और टेक नहीं है, सब का हो गया लेखा।
सत्त असत्य से न्यारा पाया, ज्ञान ध्यान से रहा अलगाया।
वह अकाम वह अगम अमाया, अद्भुत रूप परेखा ।।
नहीं बह ज्ञान विषय तुर्यातित, नहीं 'वह गत नहीं' वह अवगत।
भूल भरम में पड़े जग के मत, भूले ज्ञानी भेषा ।।
नहीं सुख रूप न होत दुखारी, नहीं 'अनहित और नहीं' हितकारी।
राधास्वामी चरण शरण वलहारी, अगम अगाध अलेखा ।।

मुझे याद है दाता दयाल ने एक बार पत्र में लिखा था फकीर चन्द, सत्संग कराना उपाधी है। कोई शक नहीं है कि हजूर महाराज ने यह काम दिया था मगर मेरी भी इच्छा थी कि मैं यह काम करूं। वही बात आज मुझे सच्ची सिद्ध हुई है।

प्रकृति मुझे इस संतमत में ले आई। इस में गुरुमत का नाम था अर्थात गुरु की पूजा करो। मैंने गुरु की पूजा बहुत की और लोगों ने भी की होगी। उनको क्या मिला मुझे नहीं पता, कोई महात्मा अपने दिल की बात नहीं बताता। दाता दयाल ने शब्दों में बहुत कुछ कहा। मगर इन शब्दों से दुनियां को क्या पता लगता है। कोई क्या समझे? जो दाता दयाल के इस ऊपर के शब्द को पढ़ेगा वह क्या समझेगा? यही कहेगा कि लिखने वाला कोई दीवाना है। इन ही बाणियों ने मुझे पागल किया हुआ था। मैं प्रत्येक वस्तु की गहराई तक पहुंचना चाहता हूं कि सच्ची बात क्या है।

देखा देखा देखा,

अगम अगोचर रूप गुरू का, गुरू की दया से देखा।

इस से पहली बात तो यह सिद्ध होती है कि

तुम सारा जीवन बाहर के गुरु को ही पूजते रहते हो, और मरते समय भी कहते हैं कि गुरू लेने के लिए आया। बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है कि वह तुम को असली गुरु का रूप बतादे। बाहर के गुरु की दया से गुरू के रूप को मैं ने पहचाना। वह क्या है? वह आखरी ज्ञान है जिस की गहराई नहीं मिलती। अगोचर के शब्द का अर्थ क्या है? मुझे पता नहीं। मैं कहना चाहता हूं कि हम लोग जो गुरुओं के पीछे फिरते हैं और बाहर के गुरु को ही सब कुछ समझते हैं। वह मूर्ख हैं और कभी आखिरी सीढ़ी पर नहीं पहुंच सकते, यह मेरी समझ में आया है।

दाता दयाल ने बहुत मुझे समझाया मगर इन शब्दों को कौन समझेगा मुझे बताओ तो सही। मुझ को यह समझ तुम लोगों से आई। मैं ने गुरु का रूप तुम्हारी दया से देखा। इस लिए तुम मेरे गुरु हो। मैं ने कैसे देखा? जब से मुझे यह पता लगा मेरा रूप प्रगट हो कर किसी के काम कर जाता है और मैं कहीं नहीं जाता, इस से मुझ को विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो रूप दाता

दयाल का, कृष्ण का, आता था या बातें होती थी वास्तव में वह गुरु नहीं था। वह नहीं आते थे। अपना ही मन था। जिस प्रकार का संस्कार था वह प्रगट होता था। मैं इस लिए यह बताना चाहता हूं ताकि संसार ग़लत गुरुवाद में फंस कर लुट न जाये। तुम देखते हो करोड़ों अरबों रुपये इन गुरुओं ने अपने डेरों में लगवाये। आनन्दपुर देख लो, चिन्तपुरनी देख लो और स्थानों पर गुरुओं के डेरे देख लो। क्या किया इन्हों ने ? बताओ ! गुरु या मालिक का रूप नहीं बताया।

मेरे पास जितने लोग आते हैं। दुनियां की इच्छा ले कर आते हैं किसी गुरु ने, किसी महात्मा ने, तुम को कुछ नहीं देना। जो जो कर्म तुम ने किये हुए हैं उनका फल तुम को मिलेगा। गुरु ने तुम्हारे ख्याल को बदलना है। तुम अपने ख्याल को बदल लो तुम्हारा जीवन बदल जायेगा। मैं ने गुरु का रूप तुम्हारी दया से देखा। गुरु की दया है मगर तुम मेरे गुरु हो। जब मैं इस बात को मानने के लिए विवश हुआ कि मेरे अन्तर जितने रंग रूप बनते हैं, ये सचाई नहीं रखते तो मैं मन

को छोड़ जाता हूं। मन से आगे है प्रकाश और शब्द, प्रकाश गुरु नहीं है। प्रकाश गुरु के चरण हैं, राधास्वामी मत के अनुसार शब्द गुरु है। मैं प्रकाश और शब्द में रहता हूं और उस वस्तु को ढूंडता हूं जो वस्तु प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह जो वस्तु है वह है गुरु का रूप या तुम्हारा अपना रूप, यह मेरा अपना अनुभव है। जब कभी उस गुरु के रूप में जाता हूं तो मैं ही नहीं रहता। जिस प्रकार एक खोल में दो तलवारें नहीं रहा करतीं। दो कैसे रहेंगी ? इस लिए हम तुम जितने हैं सब अकाल पुरुष की अंश हैं। जब गुरु की दया से यह विश्वास हो जाता है तो फिर हम कुत्ते बन कर हड्डिओं को नहीं चाटते। कुत्ता सूखी हड्डि को लेकर चबाता है। उसके चबाने से उस के मुँह से खून निकलता है। वह स्वाद तो उसे अपने खून का आता है। मगर वह समझता है, हड्डी में से खून निकला है। जो कुछ है तुम्हारे अपने अन्तर है। बाहर नहीं है। मगर अन्तर में जा कौन सकता है ? जिसको दुनियां की आस है, वह नहीं जा सकता। तुम लोग जो दूर दूर से आए हो अपने दिलों से पूछो क्या तुम गुरु का रूप देखने

के लिए आए हो ? तुम तो दुनियां की इच्छाओं को लेकर आए हो। ये सन्तमत या गुरु मत उनके लिए नहीं है। यह गुरु मत तो केवल उन के लिए है, जिन को यह विश्वास हो गया है कि मन के चक्कर में सुख नहीं है। हम थोड़े दिनों के लिये यहां पर आये हैं। यहां हमारा कोई नहीं है। कहीं से आये हैं और कहां जाना है ? सब छोड़ कर चले जायेंगे। जब तक किसी को यह तड़प नहीं है उस को नाम दान और गुरु मत में शामिल करना एक महा पाप है। ये जितने गुरु बन कर नामदान देते हैं यह सब गलती खाते हैं। स्वामी जी जिन्हों ने यह पंथ चलाया वह कह गए। नाम का अधिकारी कौन है :—

विषयों से जो होए उदासा, परमार्थ की जा मन आसा,
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे।

अब तुम बताओ तुम में से कितने आदमी हैं। जो इन वस्तुओं से बरी हैं। फिर अगर आप ये चाहें, कि आप को मुक्ति या शान्ति मिल जाये, गुरू के रूप का या अपने घर का पता लग जाये। यह पता कौन देगा ?

गुरुओं ने अपने डेरे बनाने और अपना नाम चमकाने के लिए जो भी आया नाम दे दिया। चाहे उसके कान में फूं फूं ही कर दें। अज्ञानी जीवों को जब तक वह काफी सत्संग न कर लें उनको test न किया जाये उनको नामदान देना महा पाप है। क्योंकि यह नाम बजाए लाभ के उन को खा जायेगा। फिर तुम उन तसवीरों में फसोगे जो तुम्हारे अन्तर प्रगट होती हैं उन से तुम मारे जाओगे। जिस के अन्तर आज फकीर चन्द प्रगट हो गया। उस से समझा कि बाबा फकीर बड़ी करनी वाला है। आया और दो सौ, रु० फकीर चन्द को चढ़ा गया बताओ वह लुट गया कि नहीं लुट गया? ऐसे ही जिसके लड़का हुआ और उस ने 75000 रुपये की धन राशी यहां भेजी वह भी लुट गया। वह उसकी बेसमझी ही थी और क्या था? क्या मैं ने उसको लड़का दिया? नहीं। वह तो उसके कर्म में था। ग्रहस्थियों और दुनियांदारों के लिए केवल वेद मार्ग है "शिव सँकल्पं अस्तु"। केवल अपने विचार को ठीक रखो विचार में बड़ी ताकत है। अब यह बेटी, रात को मेरे घर गई। घर के सारे झगड़े सुना दिए, जो तुम्हारे कर्म में लिखा है उसको मैं कैसे बदलूं?

मेरा बाप भी नहीं बदल सकता। इन गुरुओं और महात्माओं की अपनी स्त्रियों से नहीं बनी, झगड़ा रहा, जब ये अपना भी दुख दूर न कर सके तो हमारे दुख कैसे दूर करेंगे। तुम भूल में हो। मैं हूं समय का संत सत् गुरु। सत् गुरु कहते हैं सच्चे ज्ञान को। इस समय में जिस सच्चे ज्ञान से मानव को शान्ति मिल सकती है वह मैं बताता हूं।

कर्म जो जो करेगा तूँ अन्त में भोगना पड़ना।

देखा देखा देखा

अगम अगोचर रूप गुरु का गुरु की दया से देखा।
नहीं अनेक और एक नहीं है, नहीं वह ज्ञान विवेक नहीं है।

वह गुरु कौन है? वह है, अकह. अपार, अनामी, मगर मैं इस पर भी सन्तों के साथ सहमत नहीं हूं वह मालिक क्या है? हम अगर अकह, अपार, अनामी, कहते हैं, तो इस लिए कहते हैं, कि जब यात्रा करते हुए ऊपर अन्तर जाते हैं तो हमें अपनी ही होश नहीं रहती। हमारी मन और बुद्धि सब छूट जाती है वह बुद्धि का विषय नहीं है। फिर जब होश में आते हैं तो कह देते हैं कि मालिक को ढूँडने निकले थे। मालिक क्या निकला? अकह, अपार, अनामी

मगर वास्तव में क्या है, न कबीर साहिब को पता लगा, न स्वामी जी को, न दाता दयाल को पता लगा। उस प्रकृती के खेल का मुझे भी पूरा पता नहीं लगा। प्रकृती ही जानती है। कोई भी नहीं जान सकता। मैं तो नहीं कह सकता वह क्या है क्या नहीं मगर जहां तक हमारी खोज का प्रश्न है। वहां तक हम ठीक कहते हैं। क्या है ? समझ से जाना तो यही कहूंगा कि वह अपार है अनाम है। उसका रूप रंग कोई नहीं। क्योंकि जब मैं उसको ढूंडने के लिए जाता हूं तो समाप्त हो जाता हूं। इस लिए इस आयु में मैं अब शरणागत हो जाता हूं दाता दयाल जी का शरनागत नहीं हुआ, उस जात का शरणगत हूं, जो सब दुनियां का मालिक है।

नहीं अनेक और एक नहीं है, नहीं वह ज्ञान विवेक नहीं है।

अब जो कुछ मैं ने कहा ठीक कहा। जब मैं कभी महीने दो महीने के पश्चात, कभी तीन महीने के पश्चात वहां चला जाता हूं प्रति दिन तो जाया नहीं जाता सच्ची बात आप को बोलता हूं। तो वहां क्या है हम न उसको एक कह सकते हैं, न उसको दो कह सकते हैं, न उसको विवेक कह सकते हैं। क्यों ? क्योंकि हम ही

गुम हो जाते हैं। तो एक कौन कहेगा, दो कौन कहेगा, विवेक कौन सोचेगा ? मैं कई बार सोचा करता था और अब भी सोचता हुं कि सन्तों ने इस मसले को जनता में क्यों पेश किया ? केवल इस लिए कि हमारा ज़ात पात पक्षपात दूर हो जाये । हम जो ज़ात पात के बारे में या गुरु के बारे में झगड़ा करते हैं कि मज़हब क्या है, गुरु क्या है ? एक डेरे वाले दूसरे डेरे वाले से नहीं मिलते । अब सिक्ख अलग कोम बना रहे हैं । इस अलगपने ने तो हमारा सत्यानास कर दिया । सिर फटते हैं । हमारा यह अज्ञान दूर हो जाये नहीं तो रुहानियत के हिसाब से तो किसी को आवश्यकता नहीं । वह तो कोई २ मनुष्य होता है ।

पक्ष नहीं और टेक नहीं सब का हो गया लेखा ।

मैं सोचता हूं यह ठीक है ? हां, जब कभी मैं वहां पहुंच जाता हूं तो मेरे लिए दुनियां सारी समाप्त हो जाती है । समझ मन बुद्धि चित अहँकार सब मेरे लिए समाप्त हो जाता है, और अपनी होश नहीं रहती । यह निचोड़ निकला राम के मिलने का ।

सत् असत् से न्यारा पाया, ज्ञान ध्यान से रहा अलगाया ।
वह अकाम अगम अमाया, अद्भुत रूप परेखा ।

ये है गुरु का रूप, वहां काम नहीं, अकाम माया नहीं, वहां जब पहुंच जाओगे ज्ञानी नहीं घ्यानी नहीं, सत् नहीं, असत् नहीं वह क्या अवस्था है ? बस तुम्हारी वह अवस्था है जहां तुम अपने अन्तर चढ़ कर अपने आप को गुम कर जाते हो और उसी ज़ात में मिल जाते हो। तुम आप नहीं रहते, तुम को अपना पता नहीं रहता, वह है गुरु का रूप। अब मैं अगर कह दूं कि तुम्हारी ज़ात आप गुरु का रूप है तो क्या मैं गलत हूं ? मगर माया का चक्कर इतना भारी है कि आप को इसकी आवश्यकता नहीं मेरे पास तो जितने आदमी आते हैं। सब दुनियां के दुखों को लेकर आते हैं।

नहीं वह ज्ञान विषय तुरयातीत नहीं वह गत और नहीं वह अवगत। वह न गती में रहता है न बेगती में रहता है। वह क्या है ? कौन समझेगा उसको ? केवल वह ही समझेगा जो इस बात की खोज में रहता है कि मेरा आद है क्या, मैं ने कहां जाना है और जिस को संसार से वैराग्य हो गया है। उसको अगर कोई सत्संग मिल जाये और अभ्यास करे उसको पता लगता है कि गुरु क्या है ? शेष

नहीं समझ सकते। इस बात को समझने के लिए मैं तो राम से मिलने गया था और प्रकृति मुझे ऐसी जगह ले गई जहां से यह संतमत मुझे मिल गया। मैं ने कबीर साहब और स्वामी जी महाराज की बाणियां पढ़ीं तो दिल मैं दुख हुआ करता था। प्रार्थना किया करता था कि मैं कहां फंस गया। दाता! मैं तो तेरे मिलने के लिए निकला था आदेश था गुरु की सेवा करो गुरु तुम को सब कुछ देगा। मैं ने जितनी हो सकी गुरु की सेवा की मगर वह वस्तु न मिली। उन्होंने उस वस्तु को दिलाने के लिए मुझे यह काम दिया था। मैं न गुरु हूं न महात्मा हूं। अब मैं समझता हूं कि जो कुछ उन्होंने कहा ठीक कहा। वहां तो ज्ञान ध्यान सत् असत् कुछ भी नहीं, वह कैसे नहीं है वह मैं ने बता दिया। तुम्हारी दया से समझ मिली और पता लग गया। मगर वहां ठहरा नहीं जाता। पता नहीं मेरा क्या नतीजा होगा :—

भूल भरम में पड़े जग के मत भूले ज्ञानी भेसा।

वह कहते हैं जगत के जितने धर्म और पन्थ हैं सब भूल में फँसे हुए हैं। ज्ञानी भी भूले और

ध्यानी भी भूल गए। कैसे ? तुम मेरा ध्यान करते हो मरते समय मेरा रूप भी तुम्हारे सामने चला जाता है। मैं तो होता नहीं। तुम भूले हुए नहीं हो तो कौन हो ?

मेरी आंखों में से खून निकलता है। जब मैं देखता हूं इन गुरुओं ने हमें अज्ञानी समझ कर लूटा है। दिल जलता है। कितना अनर्थ किया गया। लोगों को झूठी बातें बता कर अपने और अपनी गद्दियों के पीछे लगाया गया और मानव जाति बट गई। मैं अवतार हूं इस वासते दुनियां में आया हूं कि यह जो अन्धेर गर्दी इन धर्म वालों ने मचाई है ये साफ कर जाऊँ। मैं राधास्वामी मत का हूं मगर मेरे में टेक नहीं है। जो सच्चाई मुझे मिली वह मैं बता देता हूं।

राधास्वामी चरन शरन बलिहारी अगम अगाध अलेखा

अब कौन समझेगा, जो पढ़ेगा वह कहेगा किसी पागल ने लिखा हुआ है और यह ठीक है। जब मेरी सुरत प्रकाश और शब्द को छोड़ कर ऊपर जाती है वहां हित किसका और अनहित किसका। क्या है वहां ? अगम है और अगाध है। अंत नहीं

मिलता अपने आप ही मनुष्य गुम हो जाता है। यह मेरा अनुभव है।

किसी को क्या मिला मुझे पता नहीं। जो कुछ मेरे साथ बीती उस समय मैं ने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊँगा। वो मैं ने कह दिया।

परसों शाम मैं रेडियो सुन रहा था। रेडियो पर ग्रन्थ साहिब का पाठ होता है। उस में अन्त में एक शब्द पढ़ा गया, जिसका अर्थ यह है। मेरा सत् गुरु सच्चा न जावे, न आवे, हर आदमी के साथ रहता है। मैं हैरान होता हूं कि आम लोग क्या समझते हैं। बाणी तो कहती है सत्गुरु तुम्हारे साथ रहता है। न वह आता है न जाता है, मगर यहां कोई फकीर चन्द को गुरु मानता है कोई और को गुरु मानता है। असल बात और सच्चाई को समझने की कौन कोशिश करता है? कोई नहीं करता। यही बात स्वामी जी ने जेठ महीने में लिखी है कि मनुष्य आगे जा कर कहां पहुंचता है।

जहां न सतनाम न नाम न अनामी

तो मैं ने जो कुछ समझा है वह स्वामी जी की बाणी जिम्मेवारी लेती है। इस लिए मैं अपने आप को ग़लत नहीं समझता। जब आदमी सफ़र के आखरी भाग में पहुंच जाता है तो वह क्या अवस्था है? अपना आपा ज़ात में गुम कर जाता है। अपनी होश नहीं रहती। जीवन समाप्त हो जाता है केवल हस्ती रह जाती है। शेष रह गया, तुम लोग आए हो, मनुष्य का सब से पहला धर्म पेट की रोटी कमाने का है। राम राम पीछे अपनी कमाई पहले। प्रत्येक मनुष्य की ड्यूटी है कि जब तक हाथ चलते हैं अपनी कमाई करे। कमाई करके आप खाने से पहले अपने बच्चों को खिलाये, गुरु पीछे से। जिन को प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगाया है वह पहले। तुम को दुनियां चाहिए। याद रखना यह कलयुग है। जो देता है वह लेता है। जिस ने पहले जन्म में दिया हुआ है उसे मिलता है। अब दोगे मिलेगा। सदैव दुखियों की सहायता किया करो। जो गरीब बे सहारे हैं उनकी सहायता किया करो। सब से पहले अपने बूढ़े मां बाप हैं उनकी सहायता करो। दुनियां में सुख प्राप्त करने के लिए ख्याल की आवश्यकता है। क्योंकि यह संसार मनोमय है।

माया का देश है। यहां तुम्हारा ख्याल काम करता है। तुम्हारी आस काम करती है। अच्छी आशा रखो, बुरी बात मत सोचो। अपना भला चाहो अपने परिवार का भला चाहो। तब किसी सीमा तक तुम्हें इस दुनियां में लाभ हो सकता है।

रह गया संत मत को समझना चाहते हो तो मानसिक और शारीरिक वीर्य को बनाए रखो। जब तक जीवन Mature न हो जाये।

फिर भी आवश्यकता से अधिक मत जाओ। विवाह से पहले छोटी आयु में जो गिर जाते हैं उन को अशान्ति का आना प्राकृतिक है। लोगों ने स्त्रियों को आजकल विषय भोग का tool समझा हुआ है। यह तो जीवन साथी हैं और अच्छी सन्तान पैदा करने के लिए हैं। अच्छी सन्तान पैदा करो, घरों में शान्ति रखो। जहां पुरुष स्त्री आपस में लड़ते रहते हैं या दिल में ग़म रखते हैं वहां बच्चे मंगलीक पैदा होंगे। कारण यह कि दिल मिले हुए नहीं होते। स्त्री पुरुष जो मरजी करते रहें वह बच्चे मँगलीक हो जाते हैं। सन्तान इतनी पैदा करो जितनी सँभाल सको। खुदरौ सन्तान अच्छी

नहीं। मैं नहीं कहता अपने अपने धर्मों को छोड़ कर मेरे पास आ जाओ। एक विश्वास और एक सच्चाई रखो, जहां भी तुम लगे हुए हो वहां सच्चे बन कर लगो और अपने अन्तर इष्ट को समझो। कर्म को ठीक करो, अपनी नीयत को साफ रखो, सच्चा प्रेम करो यह दीनता और तड़प का अँग है। जो कुछ मैं कहता हूं अगर इसको समझ लो तो तुम मेरा बदला दे ही नहीं सकते।

सब को राधास्वामी

सतसंग हज़ूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 9-7-79

मंगल मय गुरु चरण, तापत्रय हर लेने वाले।
भव दुख सकल मिटाय, शान्त पद देने वाले।
भवसागर अति अगम पँथ, नहीं सूझे कोई।
शब्द जहाज़ चढ़ाय, पार गुरु कीन्हा सोई।
बूड़त रहे मंज़धार, मिला नहीं कोई सहाई।
आये गुरु दातार, बांह गह मेरी ठौर लगाई।
नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया।
पद अभेद दरसाय भेद का फँद छुड़ाया।
राधास्वामी पद कमल, मन मधुप लुभाना।
मन बानी से परे मिला धुर पद निर्वाना।

राधास्वामी। आज गुरु पूर्णिमा है। व्यास पूजा है। भारतवर्ष में इस हिन्दू जाति में एक जज़्बा

है। किसका ? एहसान का। तुम देखो हिन्दुओं में वर पूजा (पति की पूजा) का दिन निश्चित है। एसे ही कोइ दूसरी प्रकार की पूजा का दिन है। तो आज मेरे दिल में ख्याल आता है कि मैं क्या एहसान मानूँ, दाता दयाल तो यहां हैं नहीं जो उनकी सेवा करूं। यह जो शब्द आप ने सुना है अगर ध्यान से सुनो तो पता चलेगा कि गुरु क्या देता है। गुरु शांति देता है।

मँगलमय गुरुचरण ताप त्रय हर लेने वाले।
भव दुख सकल मिटाय, शांत पद देने वाले।

गुरु का काम केवल शांति देना है। दुनियां ने गुरु का अर्थ नहीं समझा। कोई कहता है गुरु पुत्र देता है, नौकरी देता है गुरु ये देता है, गुरु वो देता है मगर मेरी समझ में आया है कि जो कुछ तुम को या हम को मिलता है ये हमारे अपने पिछले या इस जन्म के कर्म हैं या विश्वास है। कोई गुरु, महात्मा ईश्वर, परमेश्वर किसी को कुछ नहीं देता। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके अपने ही कर्म हैं और विश्वास है। विश्वास कर्मों को बदल देता है। जब अपने ही कर्म हैं तो फिर गुरु की

क्या अवश्यकता है यह एक प्रश्न मेरे दिल में उठता है। गुरु अपने कर्म ठीक बनाने के लिए रास्ता बताता है। अपने विचारों और मनुष्य जीवन को अच्छा बनाने का ढ़ंग बताता है इस लिए गुरु की महिमा है। गुरु तो एक बड़ा लम्बा चौड़ा शब्द है। गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का और विवेक का आप खुद सोचो कोई काम दुनियां का एसा नहीं जो बिना सोच समझ के आप कर सकते हैं। डाक्टरी करते हो आपको डाक्टरी का ज्ञान मिला हुआ है। डाक्टरी का एक ज्ञान है। दुनियां की और मशीनें बनती हैं, उनका एक ज्ञान है। तो मन को शांति देने के लिए भी एक ज्ञान है। जो मुझ को दाता दयाल की दया है आप लोगों से मिला है। इसलिए इस समय दाता दयाल तो यहां हैं नहीं मेरे शरीर को कुष्ट पड़े झूठ नहीं बोलता मैं आपको सच्चा सत्गुरु मानकर आपको नमस्कार करता हूं। अगर दाता दयाल जीवित होते तो मैं उनकी पूजा करता. वह तो यहां हैं नहीं। कहां गये ? क्या पता। आप लोगों का एहसान मुझ पर है। वह एहसान क्या है ? आप ने मेरे बहमों का इलाज करके मुझे शांति दे दी है। दुनियां यह चाहती है कि गुरु

फूँक मारकर उनको शांति दे दे यह ग़लत है। कोई गुरु किसी को फूँक मार कर शांति नहीं दे सकता, मनुष्य को अपने ही अन्तर अपने ही विश्वास से, अपनी ही समझ से शान्ति मिलेगी। आज गुरु पूर्णिमा का दिन है। मैं ने अपने आपको समय का सन्त सत् गुरु कहा है और ऊँची आवाज़ से घोषणा करता हूं कि कोई गुरु कोई महात्मा, कोई परमात्मा किसी को कुछ नहीं देता। जो कुछ किसी को मिलता है वो उसके अपने ही कर्म, अपने ही धर्म और अपने ही विचारों का फल मिलता है। यह मैं ने 93 वर्ष की आयु में आप लोगों से सीखा है।

ये मैं जानता हूं कि मेरे साफ साफ कहने से मेरे पास कोई नहीं आयेगा और मन्दिर में पैसा नहीं आयेगा मगर यह सचाई है। जो मैं सन्त सत्गुरु वकत के रूप में आज आप लोगों का एहसान मानता हुआ कह रहा हूं कि मुझे गुरुमत से क्या मिला। यही सन्त कहते हैं :—

गुरु बतावें साध को साध कहें गुरु पूज।
अर्स परस के मेल से बूझी बूझ अबूझ।

पिछले समय में बात को पर्दे में रखा गया था, कबीर साहब ने भी परदा रखा, स्वामी जी ने भी परदा रखा, दाता दयाल ने भी किसी हद तक परदा रखा। वह परदा उस समय के लिए आवश्यक था। अब अपना राज्य है हम अपनी हकूमत के आप जिम्मेवार हैं। इसलिए दाता के आदेश के अनुसार मुझे इस भेद के खोलने की आवश्यकता पड़ी। ये मैं क्यों कहता हूं, मुझे शांति कैसे मिली ? केवल मन के रूप को समझ लेने से। केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न मैं किसी का काम करता हूं, न किसी को सत्लोक ले जाता हूं, नहीं किसी को मरते समय ले जाता हूं। वह कौन जाता है ? ऐ इन्सान ! वह तेरा अपना विश्वास जाता है। तेरा अपना कर्म जाता है यह तेरा अपना मन ही है। तुम डाक्टर अहूजा हो वहां से पत्र लिखते हो। अगर मेरे बस में हो तो दुखी जीव मेरे पास आते हैं, मैं उन सब को सुखी कर दूँ। मैं बात सच्ची कहता हूं। आग लगे गुरुवाई को मैं ने गुरुवाई से क्या लेना ? मैं तो हिन्दू था ब्राह्मण के घर जन्म हुआ। किसी वस्तु की तलाश थी जहां से आया

हूं। सात वर्ष की आयु थी। मैं आपको कहा करता हूं। राम और कृष्ण को पूजता था। अधिकतर सिद्धियां शक्तियां आईं। एक बार वागां वाले में था कहीं से आ रहा था, राम कृष्ण की मूर्तियां मेरे सामने रहती थीं। वहां गौ का गोबर पड़ा था। कृष्ण जी की मूर्ती ने कहा गोबर खा ले। मैं ने गोबर उठाया और खा लिया। जब स्टेशन पर आया सोचा, किसी स्थान पर भक्तमाल में यह नहीं लिखा, न ही किसी ने कहा हो कि गोबर खा ले, ये कृष्ण नहीं है जिस ने मुझे कहा है। फिर क्योंकि मैं राम के रूप में मालिक को मानता था इस लिए मालिक से प्रार्थना करने लगा। 24 घंटे रोया कि, हे राम, मुझे मिल जा क्योंकि ब्राह्मण था, पढ़ा हुआ था।

नाना भांति राम औतारा।
रामायण शत कोट अपारा।

मैं ने कहा वह आया करता है मेरे लिए भी आयेगा। 24 घंटे रोने के पश्चात एक दृष्य था जो दाता दयाल के चरणों में ले गया। मैंने उनको राम समझ कर पूजा। उन्होंने मेरे विचार को

बदला। क्या कहा कि तू भक्ति करता है सोच समझ के कर। मैं उनको राम समझ कर पूजता था, और दाता दयाल को गुरु समझ कर नहीं लिखता था, मालिक समझ कर लिखता था, परम तत्व समझ कर उनको माना मगर उन्होंने मेरे विचारों को उस समय बड़ी हिकमत से बदला। एक शब्द में वह मुझे लिखते हैं :—

फकीरा सोच समझ पगधार।
बिन समझे कोई पार ना पावे भटके वारम्बार।

ये सत्संगी जो भटकते फिरते हैं ये क्यों भटकते फिरते हैं ? क्योंकि इन को सच्ची समझ नहीं है। बड़ा ओफीसर बन जाना या धनवान हो जाना और वस्तु है, सच्ची बुद्धि, और सच्चा विचार रखना और चीज़ है। बड़े २ धनी प्राय: अज्ञानी होते हैं और गरीब से गरीब समझदार हो सकता है। जब मैं उनसे प्रेम करता था और उनको राम समझ कर पूजता था तो वह मुझे कहते हैं। फ़क़ीर चन्द, सोच समझ कर पैर रख, यही बात सुखमनी साहब में लिखी हुई है।

सत् पुरुष जिन विवेक्या सत्गुरु तिसका नाम ।
वाके संग शिष उभरे नानक हरी गुण गान ।

वह लिखते हैं जिस मनुष्य ने सत्पुरुष को विवेक लिया, समझ लिया, वह सत्गुरु है । उसकी संगत करो, उसकी सेवा करो और उसकी पूजा करो फिर वह लिखते हैं सत्पुरुष क्या है :

जिभ्या एक अस्तुती अनेक ।
सत्पुरुष है पूरण बिवेक ।

सन्तों के मार्ग में कोई अन्तर नहीं । केवल बानी का अन्तर है ।

बिन समझे कोई पार ना पावे भटके बारम्बार ।

तुम भटकते हो या नहीं भटकते ? किसी की स्त्री से नहीं बनती, किसी की पुरुष से नहीं बनती' किसी को घाटा पड़ गया, किसी का पुत्र मर गया तो हम हाय हाय करते हैं, रोते हैं पीटते हैं । हमारे सन्तान नहीं होती, जब सन्तान हो जाती है तो बड़े होने पर हमारे गले में अँगूठा देती है तो फिर हम यूँ पीटते हैं । तो इस दुख को दूर करने के लिए गुरुमत है । गुरु क्या करता है ? सच्ची समझ देता है । सच्ची

सोच विचार देता है। जब तक किसी को सच्ची समझ और सच्चा विचार नहीं मिलता। उसके मन को शांति नहीं मिलती। वह भटकता रहेगा। कभी कहीं जायेगा, कभी कहीं जायेगा, कभी कहीं जायेगा। कभी होशियारपुर आयेगा। वह कहते हैं सोच समझ पगधार।

सँशय दुबधा और चतुराई ये अज्ञान विकार।
कई आदमियों के मनों में प्रश्न पैदा होते हैं। किसी बात पर विश्वास नहीं बैठता और कई बड़े चालाक होते हैं। वह कहते हैं यह सब माया का जाल है। जो इस में फँसा उसको शांति नहीं मिलती :

गुरु पशु, नर पशु कोई तिरया पशु वेद पशु संसार।

वो कहते हैं कोई नर पशु है। नर पशु का अर्थ है आदमी आदमी की पूजा करता है। उसको सब कुछ समझता है। कोई स्त्री पशु है स्त्री के पीछे फिरता रहता है। वह जूते भी मारती है, गालियां भी निकालती है, मगर काम के बस में फिर वह स्त्री के पीछे फिरता है। कोई गुरु पशु है, बात को समझता नहीं गुरु के पीछे फिरता है। उससे

प्रार्थना करना, उसको पैसे देना, मत्थे टेकना, सब कुछ उसी को समझना गुरु मुझे कुछ देगा ये गुरुपशु हैं।

वेद पशु, कोई कहता है वेदों में यह लिखा है, कोई कहता है कुरानशरीफ में यह लिखा है, गीता रामायण में यह लिखा है। मैं कैसे मानूँ गीता के कहने वाले कृष्ण जी ने 18 अध्याय गीता के अर्जुन को सुनाये जैसा कि हमारी पुस्तकों में लिखा हुआ है। मगर महाभारत तो यह कहता है कि पांचों पांडव और सारे कौरव नर्क में गए, वह जो उसने गीता सुनी उस से उसको क्या मिला ? कुछ नहीं। गुरु अर्जुन देव सुखमनी साहब में लिख गए कि प्रभु के सुमिरन करने वाले का शत्रु टल जाता है। उसका दुशमन कोई नहीं रहता। मगर गुरु अर्जुन देव के भाई ने कितनी दुश्मनी की ? उनको कहां पहुंचाया।

तो सिद्ध हुआ कि किसी बात को बिना सोचे समझे करने से कोई शांति किसी को नहीं मिल सकती। बिलकुल सच्ची बात है। मुझे आप नहीं मिली, मैं गुरुपशु था।

शांति मुझे सत्संगियों की दया से मन के रूप का विचार करने से मिली। इस लिए आप मेरे सच्चे सत्गुरु हैं। और आज गुरु पूर्णिमा के दिन आपकी पूजा करना चाहता हूं। आप लोग आये हैं। आप मेरी पूजा करने के लिए आए हैं। धर्म से कहता हूं मैं आपकी पूजा करना चाहता हूं। मुझ को जो कुछ दाता दयाल लिख रहे हैं उसकी समझ नहीं आती थी। तो उन्हों ने कहा था तुझ को सच्चा सत्गुरु सत् संगियों के रूप में मिलेगा वह तुम्हारे इस भ्रम को दूर करेगा, और आप लोगों ने मेरे भ्रम को दूर कर दिया। तो आदमी को सोच समझ के साथ काम करना चाहिए मैं सत्सँग में क्या करता हूं? सोच और समझ देता हूं। मगर आजकल के गुरु क्या करते हैं। कबीर साहब लिखते हैं :—

ये कली गुरु बड़े परपँची डारी ठगोरी सब जग मारा।
वेद कतेब दोनों फन्द पसारा तेई फन्दे पर आयो विचारा।
कहें कबीर तेही हँस न बिसारो जा में है छुडावन हारा।

कोई सच्ची बात नहीं बताता। अपने अपने धर्म और अपने मण्डल में फँसाने की कोशिश करते

हैं अपने पीछे लगाते हैं। मैं एसा नहीं करता। आज गुरु पूर्णिमा का दिन है। दाता दयाल का तो एहसान है। उनका आदेश था मगर जो एहसान आप लोगों ने मुझ पर किया वह इतना बड़ा है कि उसको जब तक मुझे होश है मैं बिलकुल नहीं भूल सकता। जब मैं राम से मिलने के लिए गया था और दाता दयाल को राम समझ के पूजता था उस समय वो लिख रहे हैं।

फकीरा सोच समझ पगधार।
बिन समझे पार न पावे भटके बारम्बार।
संशय दुबिधा और चतुराई ये अज्ञान विकार।
कोई नर पशु कोई त्रिया पशु गुरु पशु कोई गँवार।

जो गुरु को नहीं समझता और सेवा करता है। दाता दयाल कहते हैं वह गँवार बेसमझ हैं।

वेद पशु है सब संसार बिना विवेक विचार।

वो कहते हैं वेद पशु। कोई कुरानशरीफ का उदाहरण देता है, कोई गीता का उदाहरण देता है, कोई कहता है पहली बादशाही ये कहती है, दूसरी बादशाही ये कहती है, तीसरी बादशाही ये कहती है, कृष्ण जी ये कहते हैं, मनु जी ये कहते हैं, ये जितने

ऐसा कहने वाले हैं सब वेद पशु हैं और कबीर साहिब के शब्दानुसार सब के सब गँवार हैं। ये उनकी बातें हैं। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्या ये ठीक लिख गए ? हां ठीक लिख गये, ठीक लिख गए। अगर आज मुझे संतमत की सच्चाई का ज्ञान न होता तो मैं राधास्वामी मत या सँतमत की धज्जियां उड़ा देता कभी किसी का लिहाज़ न करता। मगर मैं मजबूर हूं। सच्चाई सच्चाई ही है। और यह सच्चाई मुझ को तुम लोगों से मिली। जिस ने मेरी आंखें खोल दीं। मैं इस नतीजे पर आया कि जो किसी के कर्म में लिखा है वह हो के रहता है। संतों के अपने बच्चे नालायक निकले, अपनी औरतों से उनका झगड़ा रहा। क्यों ? कर्म। इसलिए मैं शिक्षा को बदल रहा हूं। में क़हता हूं ऐ मानव, तूँ राम राम बेशक मत जप, अपनी नियत को साफ रख और अपना कर्म ठीक कर। तुम दूसरे गुरुओं के पास जाओ, कोई भी दुख दूर नहीं कर सकते। वे कहते हैं सुमिरण ध्यान किया कर भाई, सुमिरण ध्यान से क्या बनेगा ? वह सुमिरण ध्यान भी ढ़ंग से करना चाहिये।

माया पशु माया का बन्धवा मुक्ति पशु सुवीकार।

देखो क्या कहते हैं। वह कहते हैं, जो दुनियां में माया चाहते हैं वह ग़लती पर हैं और जो मुक्ति चाहते हैं वो भी ग़लती पर हैं :

भक्ति पशु बन्धन नहीं काटे बूड़ा कालीधार।

सब कहते हैं भक्ति करो, कोई कहता है राम की भक्ति करो कोई कहता है अमुक की भक्ति करो, कोई कहता गुरु की भक्ति करो। अब मैं अपने जीवन में ऐसी बानियां सुन कर चकित हुआ और सच्चाई ढूँडना चाहता था तो क्या मैं एसा कहने का अधिकार नहीं रखता ? भक्ति पशु भी बन्धन में है। कौन समझेगा सन्तमत को। क्या आप सन्तमत को समझने आये हैं ? आप लोग जो मेरे पास आते हैं क्या सच्चाई और असलीयत को समझने आते हैं। भक्ति पशु भी बन्धन में है। क्यों बन्धन में है ? भक्ति जब की जायेगी किसी और की या ग़ैर की की जायेगी। दूसरा कोई होगा तो उसकी भक्ति करोगे। द्वैत भाव है। वहां अद्वैत तो है नहीं। जो भक्ति पशु हैं, उनके बन्धन कैसे कटेंगे कट ही नहीं सकते जो चाहे करो।

गुरु भक्ति क्या है ? गुरु की भक्ति ये नहीं है कि दस हज़ार रु० लाकर फकीर चन्द का मन्दिर बनवा दो। तब तुम भक्त हो, नहीं, तुम लुट गए। अगर तुम्हारे पास है तो दे दो। तुम दूसरों के हित के लिए जो मरजी हो करो। मगर परमार्थ के विचार से अगर आप यहां 10 मकान बना दोगे तो आप शांति को नहीं पा सकते आप में अहँकार आ जायेगा कि मैं ने बावे को इतना रू० दिया, मन्दिर बना दिया या देवी का मन्दिर बना दिया, मैंने ये मसजिद बना दी, मैं ने ये गिरजा घर बना दिया। भक्ति किस की ? गुरु की। वह भक्ति क्या है ? जो इस समय आप कर रहे हैं शर्त यह है कि तुम्हारा पूरा ध्यान मेरी बानी की ओर हो। गुरुकी भक्ति है :—

दर्शन करे वचन पुनि सुने, फिर सुन सुन नित मन में गुने।
गुन गुन छांट लेय उन सारा, सार धार तिस करे अहारा।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई जग भौ लाज अब गई बसाई।

कई आदमी प्रात: से सायं तक मेरी जान खाते हैं। सत्संग में नहीं आते। उनको क्या मिलेगा मेरे दर्शन करने से ? ये उनका वहम नहीं तो और क्या है ? मैं सारा दिन यहां रहता हूं। कोई 11 बजे आता है, कोई 12 बजे आता है, कोई एक बजे और

कोई 2 बजे आता है। क्यों आते हो भई ? दर्शनों के लिए। क्या बन जायेगा भई मेरे दर्शनों से ? तुम्हारा अपना विश्वास है और कुछ नहीं। यह गुरु भक्ति नहीं है। गुरु भक्ति यह है जो इस समय आप बैठ कर मेरी बात सुन रहे हैं। समझ रहे हैं और गुन रहे हैं। इसका नाम गुरु भक्ति है। दूसरे शब्दों में यह सत्संग है। धन देने का परमार्थ से कोई सम्बन्ध नहीं है। ये तो दुनियां का व्यवहार है। इसका भी फल मिलेगा :—

भक्ति पशु बन्धन नहीं काटे बूड़ा कालोधार।

ये मुझे पता नहीं था मैं तो दाता दयाल की पूजा किया करता था। ताज बनाता, ये करता, वो करता तो वो मुझे लिखते थे। सोच समझ से काम ले :—

ज्ञान पशु की क्या करूं निन्दा वो ग्रन्थन की लार।

ज्ञान पशु, ज्ञानी उदाहरण देता है "अहम ब्रह्म असमी" और उसकी दलीलें देता है। कहते हैं वह मंजिल पर नहीं पहुंचा।

जड़ चेतन की गांठ न खोले उरझ उरझ रहा हार।

उसने अपने जड़ चेतन की गांठ जो तुम्हारे अन्दर भी है नहीं खोली। वह जड़ चेतन क्या वस्तु है ? वह जो असली मेरा रूप है जब वह शरीर और मन या रूपों और रंगों में आ जाता है और मन के खेलों को सत्य मानता है, वह जड़ चेतन की ग्रन्थी पड़ी हुई है और मन की फुरना व संकल्प, मन का विचार, मन का विश्वास और मन के अन्दर जो कुछ प्रगट होता है वो चेतन नहीं है, माया है। ऐ इन्सान! तुझ को जो कुछ मिलता है या मिलेगा तेरा अपना ही विश्वास है। तेरा अपना ही यकीन है और तेरा अपना ही विचार है :—

जैसी आशा वैसी बासा, जैसी करनी वैसी भरनी।
ज्ञान पशु की क्या करूं निन्दा वो ग्रन्थन कीलार।

ज्ञानी क्या कहता है? गीता ये कहती है, रामायण ये कहती है, कुरान शरीफ़ ये कहता है, अन्जील ये कहती है, पहली बादशाही ये कहती है, दसवीं बादशाही ये कहती है। ग्रन्थों के लार में डूबा हुआ भाषण देता फिरता है। उसकी जड़ चेतन की ग्रन्थी नहीं खुली। मेरी कैसे खुली ? मन के रूप को समझ लेने से वह जड़ चेतन की ग्रन्थी उतर

गई। अब जो कुछ मेरे अन्दर पैदा होता है, मैं उस में फंसता नहीं। जब तक शरीर है संकल्प और विचार उठेगा तो सही मगर मैं उस अपने विचार में उलझता नहीं, फँसता नहीं। मैं जानता हूं यह माया है। नहीं फंसता।

योग पशु वन्धे योग की रसरी बैठ ग्रासन सार।

क्यों? अपने अन्तर तुम जो मूर्ति बनाते हो राम की, कृष्ण की, देवी की, देबता की, बाबा फकीर की या और किसी की वह तुम अपने ही मन की पूजा करते हो। लोग मेरा ध्यान करते हैं मेरा रूप उनकी सहायता कर जाता है और मेरे बाप को पता नहीं? उनकी सहायता किस ने की? मैंने की? नहीं। उनके अपने ही मन ने की। इसी प्रकार यह सब सँसार मन का पुजारी है।

राधास्वामी चरशरण बलहारी सेवक हुआ भवपार

कौन सेवक पार हुआ, कैसे पार हुआ? गुरु की सेवा। की गुरु की सेवा केवल रु० देना नहीं है। मगर गुरु की सेवा सच्ची भक्ति अगर कोई है तो सत्संग में बैठकर उसकी बात को सुनना, समझना, और गुनना है और सच्ची समझ को हासिल

करना है शर्त ये है कि गुरु पूरा हो। गुरु नाम तो सच्ची समझ का, ज्ञान का और विवेक का है। गुरु के चरण हैं प्रकाश और गुरु है शब्द। आज गुरु पूर्णिमा का दिन है। मैं अपनी ड्यूटी समझता हूं कि जो ज्ञान मैं ने प्राप्त किया है, जिस ज्ञान से मुझ को शांति मिली है वह ज्ञान मैं आपको बता जाऊँ ताकि मेरी ड्यूटी पूरी हो जाये और आपको शांति मिले। वह ज्ञान क्या है? सोच समझ के साथ काम करो। वह सोच समझ क्या है? वह मैं आपको आसान से आसान ढँग बता देता हूं। दाता दयाल का क्या भाव है, क्या सोच है मुझे नहीं पता। मैंने क्या सोचा वह बता रहा हूं। वेद मार्ग में आदेश है "शिव संकल्पं अस्तु" मन की फुरनाओं और विचारों को साफ रखो, घरों में शांति रखो, प्रेम और सहानुभूति से रहो। नौजवानों को जब तक प्रौढ़ता (Maturity) न आए अपने काम अँग को रोकना चाहिए नहीं तो तुमको या तो डाक्टर लूटेंगे या मेरे जैसे साधु लूटेंगे। जो आदमी अपने वीर्य को अधिक बरबाद करता है उसका मन टिकाने नहीं रहता वह सच्ची सोच (Correct thinking) नहीं कर सकता। समझ कर अपने अन्तर चलो

मन के रूप रंग, शकलें और विचार जो तुम्हारे अन्तर आते हैं इन को छोड़ जाओ। यह मन के विचार ही भवसागर हैं कोई इन से निकल नहीं सकता जब तक मन के रूप को न पहचाने। मेरी छोटी आयु में शादी हो गई क्योंकि से विषयी था इसलिए बात समझ में नहीं आती थी। मन से दुखी था गुरु मिल गए उन्होंने मन के चक्कर से निकाला और समझा दिया। जब तक यह ज्ञान न हो कि संकल्प माया है वह कर्म बन जाता है। अब मैं समझ गया कि यह सब माया है, है नहीं। जब से मन के रूप का भेद या ज्ञान मिल गया, मन के चक्कर से निकल कर ऊपर चला जाता हूं और प्रकाश और शब्द में रहता हूं फिर उस चीज़ को देखता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। जब कभी भाग्य में हो वहां की समाधि लग जाती है तो मालूम होता है कि मेरा तो वज़न ही कोई नहीं। कबीर साहब का शब्द है। कहते हैं वह गुरु तो परम तत्व या मालिक तो फूल की महक से भी सूक्षम और हल्का है :—

ऐसा लो तत ऐसा लो, मैं केही विधी कथौं गम्भीरा लो।
बाहर कहौं तो सतगुरु लाजे, भीतर कहूं तो झूठा लो।

बाहर भीतर सकल निरंतर, गुरु परतापैं दीठा लो।
दृष्टि न मुष्ठि न अगम अगोचर, पुस्तक लिखी न जाई लो।
जिन पहचाना तिन भल जाना, कहे न को पतिआई लो।
मीन चले जल मारग जोवे, परम तत्व धौं ऐसा लो।
पहुप बास हूं ते कछु झीना, परमतत्व धौं एसा लो।
आकासे उड़ि गयो विहँगम पाछे खोज न दरसी लो।
कहे कबीर सत्गुरु दया ते, विरला सत पद परसी लो।

वहां पहुंच कर मैं क्या कर सकता हूं ? अगर मैं वहां पहुंचकर कुछ कर सकता होता तो अपनी ही कोई तकलीफ़ ठीक कर लेता। मुझे शांति कहां मिली ? मैं कौन हूं ? एक मालिक है वह बेअन्त है। मैं उस मालिक की अँश हूं। दुनियां में आया हूं उसमें फँसता नहीं, शांत रहता हूं, प्रसन्न रहता हूं, बेफिकर रहता हूं दुख सुख मुझ पर भी आते हैं। यह नहीं कि नहीं आते मगर मैं भूल जाता हूं। ये मैंने पाया। अब केवल शरनागत रह गया। किसकी ? उस एक की जो सब का मालिक है। मेरी नियत साफ है। मैंने प्रण किया था मैं इस रास्ते पर चलूंगा और अपना अनुभव कह जाऊंगा। मैं नहीं चाहता कोई फकीर चन्द को पूजे। अगर में सच्ची बात नहीं

कहता और कहता हूं कि हां मेरा ध्यान किया करो मैं तुम्हें सत्लोक में ले जाऊंगा तो मैं तो दोषी हूं। मुझे किस ढ़ंग से शांति मिली ? मैंने क्या समझा गुरु के चरण ? दातायाल के इन चरणों को बहुत धो धो कर पिया। मगर इस से परमार्थ का लाभ नहीं हुआ। जो मैं कहता हूं इसे समझ कर अपने अन्तर चलो। जो क़ुछ है तुम्हारी अपनी आत्मा की सच्चाई है और तुम्हारा विश्वास है। गुरु एक शक्ति है, समझ की, ज्ञान की, अनुभव की जो प्रत्येक आदमी के अन्दर है मगर इस के लिए साधन और सत्सँग की आवश्यकता है। गुरु तुम्हारे अन्दर रहता है बाहर नहीं रहता। बाहर का गुरु तो बताता है कि गुरु तुम्हारे अन्दर है। गुरु या मालिक के रूप को समझ कर सच्चे बन के जिस रूप में तुम उसको मानते हो, अपने आपको उसके हवाले किया करो। अपनी नियत को साफ़ रखा करो, वह तुम्हारा है तुम उसके हो। अपनी गरज़ के लिए किसी से धोखा चारसौबीस मत करो आजकल गु मत पाखण्डइज़म है। लोग कहते हैं गुरु से नाम ले लो, वह जन्म जन्मान्तर के पाप ले लेता है। और तुम्हें सतलोक पहुंचा देगा। एसी एसी रोचक

बातें कह कह कर उन्होंने हम लोगों के धन लूटे : हम से नाक रगड़वाए और अपनी पूजा करवाई। अपने मरने के पश्चात जिस को गद्दी पर बैठा गए उनकी पूजा करवाई। इन धर्मों ने शेरों को गीदड़ बनाया हुआ है। में अनामी धाम से केवल इस लिए आया हूं कि इन गुरुओं और धर्मों ने जो धान्धली मचाई हुई है इन को बता जाऊँ कि ये ग़लती पर हैं और बता दूँ कि सन्तमत क्या वस्तु है।

अब केवल यह चाहता हूं कि सब कुछ भूल जाऊँ। दुनियां भूल जाऊँ, मन भूल जाऊँ, पन्थ भूल जाऊँ, गुरु भूल जाऊँ, कहां से आया था कहां जाऊँगा ? न कहीं से आया न कहीं को गया। मेरे अन्दर एक (मैं) पैदा हो गई। देह की 'मैं', मन की 'मैं', आत्मा की 'मैं' सुरत की 'मैं'। तीन 'मैं' तो समाप्त हो गई ये तो मुझे फँसाती नहीं : मगर सुरत की 'मैं' अभी मेरे पास है। ये कब जायेगी मुझे पता नहीं।

सब को राधास्वामी

'हिन्दूपना अथवा इन्सानपना'

कुछ दिन हुए शहर के कुछ पढ़े लिखे सज्जन मेरे पास आये। उन्होंने कोई सनातन धर्म का स्कूल खोलना था, उसका उद्‌घाटन करने के लिए मुझे विवश किया, मैं वहां गया, वहां लगभग 60, 70 आदमी थे। मैं वहां आधा घण्टा केवल मनु ऋषि और अपने अनुभव के अनुसार अच्छी सन्तान पैदा करने और नामकरण संस्कार आदि पर बोला और अच्छी शिक्षा देने पर बल दिया। वहां और सज्जनों ने भाषण दिये। उन्होंने स्कूल का नाम तो बहुत थोड़ा लिया मगर हिन्दू संस्कृति, पुरानी संस्कृति और 'हिन्दू विश्व परिषद' पर बोले। वे चाहते थे कि सारी दुनियां के अन्दर जितने भी हिन्दू हैं उनका संगठन किया जाए और साथ यह भी कहा कि हम राजनीति में भाग लेने वाले आदमी नहीं हैं। अन्त में मैंने उनसेयही कहा कि आप बतायें कि हिन्दू सस्कृति या पुरानी संस्कृति क्या है ? वह मुझे समझा देवें।

सर्वसाधारण में नहीं बल्कि आपका जो योग्य आदमी हो वह घण्टा आधा घण्टा मन्दिर में आकर मेरे साथ विचार विमर्श करे। मगर आज दिन तक कोई नहीं आया। चूंकि मैंने वहां कहा था कि मैं न हिन्दू हूं, न मुसलमान हूं, न सिक्ख हूं, न इसाई हूं बल्कि इन्सान हूं।

जब मैंने 15 अगस्त 1947 में 'इन्सान बनों' पुस्तक लिखी थी तो उसपर मेरे एक मित्र जो कट्टर हिन्दू कहलाते थे वह आये। उन्होंने मेरे 'इन्सान बनों' की पुस्तक को पढ़कर भिन्न २ प्रकार के प्रश्न किये और उत्तर चाहा। वे प्रश्नोंत्तर परिशिष्ट नं० २ के रूप में 'इन्सान बनों' के दूसरे Addition में छपे थे। उनको यहां जनता के सामने पेश करता हूं और चाहता हूं कि अगर मैं ग़ल्ती पर हूं तो उसका खण्डन कर दें। मेरा अपना निजी विचार यह है कि शिक्षा समय और परस्थितियों के अनुसार होनी चाहिए तब शान्ति आती है। हिन्दू शब्द प्रयोग करने से विरोध ज़रूर होगा और झगड़ा पैदा होगा। मुझे दो तीन बार 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' की सभाओं में भाषण देने का अवसर

मिला। मैंने वहां कहा था कि अगर आप हिन्दू शब्द की बजाय मानव शब्द का प्रयोग करें तो आपका R.S.S. कामयाब हो जायेगा वरना सफलता की उमीद मत रखना और वही हो रहा है। इस भूमिका के बाद मैं वह परिशिष्ट नं० 2 यहां देता हूं।

परिशिष्ट भाग दो

'मनुष्य बनों' नामी पुस्तक मेरे एक मित्र ने पढ़ी। वे हिन्दू धर्म के अनुयाई हैं और अपने आपको सच्चा हिन्दू समझते हैं। ये मेरे बिचारों से सहमत नहीं थे। अवकाश मिलने पर वह मेरे पास आये। शंका निवारण के लिए जो बार्तालाप मुझमें और उनमें हुआ वह इस पुस्तक के परिशिष्ट भाग २ के रूप में दिया जाता है ताकि हिन्दू धर्म के अन्य अनुयाईयों को हिन्दूधर्म के महत्व का पता लग सके।

मित्र—मैंने आपकी पुस्तक 'मनुष्य बनो' का ध्यान पूर्वक अध्ययन किया है। इसके अध्ययन के पश्चात् मेरे दिल में आपके लिये घृणा तो नहीं मगर कुछ संशयात्मक विचार अवश्य उत्पन्न हुए हैं। यदि प्रेम भाव न होता तो घृणा हो जाना अवश्यम्भावी था। अत: जो भाव मेरे दिल में उत्पन्न हुये हैं पूर्णरूपेण प्रगट करता हूं। सुनिये :—

आपके गुरु महाराज महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज ने जीवनभर हिन्दू धर्म की महानता को स्वीकार किया है। हिन्दू धर्म की व्याख्या और गुप्त रहस्यों के खोलने में हजारों पुस्तकें लिखीं। कुछ अवसरों पर उन्होंने अपने हिन्दू होने पर गर्व प्रगट किया है, बल्कि उनका आर्य समाज से त्याग का कारण यही था कि 'आर्य गज़ट' अख़वार में जिसका वह सम्पादन करते थे, साधारण रूप से हिन्दू शब्द प्रयोग करते थे। स्वर्गीय ला० लाजपतराय की इच्छा थी कि हिन्दू की बजाय आर्य शब्द लिखा जाय। फल यह हुआ कि उन्होंने सम्पादक पद से त्याग पत्र दे दिया, और 'साधू' नामी पत्र अलग जारी कर लिया। मगर शोक के साथ कहना पड़ता है कि आप ब्राह्मण होते हुये हिन्दू धर्म की जड़ पर कुल्हाड़ी चला रहे हैं। आपके लेख से विदित होता है कि आप न हिन्दू रहे न मुसलमान बने, बल्कि मनुष्य होने के दावेदार हैं। यह मैं स्वीकार कर सकता हूं कि वर्तमान शिक्षित समुदाय आप के विचारों को पसंद करेगा और उनके विरोध करने का साहस करना भी कठिन समस्या है। मेरा अभिप्राय यह है कि आपने हिन्दू शब्द को छोड़कर मनुष्य शब्द का

प्रयोग करने में क्या श्रेष्टता समझी ? क्या आप ऋषियों, मुनियों और शास्त्र कारों की शिक्षा को जो हिन्दू धर्म का अटल भंडार है सर्वश्रेष्ट स्वीकार करने को तैयार नहीं ?

फ़कीर—पक्षपात के कारण आपके दिल में क्रोध पैदा होना स्वाभाविक और अवश्यम्भावी था। पक्षपात कुष्ट का रोग है। यदि प्रेम का भाव न होता तो शायद आप भी उन हिन्दू और मुसलमानों की भांति जिन्होंने बिरोधी दल के लोगों की जान लेना पुण्य कर्म समझा है और निर्दयता से नंगी धड़ंगी दशा में घर बार छोड़ने पर विवश किया है, आप भी मुझे कष्ट पहुंचाते और सूरत देखने से घृणा करते।

खैर! अब आप अपने सवाल का जबाब सुनें।

हिन्दू शब्द वास्तव में सिंधू है। आदि में इस पृथ्वी के टुकड़े पर केवल जल ही जल या समुद्र ही समुद्र था। इस जल से सब से पहिले जो पृथ्वी का टुकड़ा दृष्टि में आया, वह हमारा देश था। आप शायद प्रमाण मांगें। इसलिए मैं आपका ध्यान हिन्दुओं के प्राचीन गृन्थों की ओर लेजाता हूं, जिन

में इस पृथ्वी के टुकड़े की आयु अरबों वर्ष की बताई गई है। इसके विरुद्ध पश्चिमी विद्वानों ने इस पृथ्वी की आयु कुछ हजार वर्ष स्वीकार की है। मनुष्य भी प्रारम्भ में इसी पृथ्वी पर पैदा हुआ। अतएव पृथ्वी के इस टुकड़े को सिंधु देश कहते थे और यहां के निवासियों को सिन्धू कहा जाता था।

स्थान और जलवायु के परिवर्तन के कारण शब्द में भी परिवर्तन हुआ और सिन्धू शब्द हिन्दू बन गया। संस्कृत भाषा के कुल शब्द जो 'स' से आरम्भ होते हैं फारसी भाषा में उनका 'स' से 'ह' में परिवर्तन हो जाता है। जैसे सप्ताह से हफ्ता बन जाता है। इसी प्रकार सिन्धू शब्द बिगड़ कर हिन्दू बन गया।

अब रह गया यह सवाल कि मैंने शब्द 'मनुष्य' क्यों प्रयोग किया। सुनिये। हिन्दू को सर्व साधारण ने ही नहीं बल्कि स्वयं हिन्दुओं ने सीमित बना दिया है। सीमितपने या अंशपने में दुःख और आपत्ति है। इसके विरुद्ध असीमितता में अमन और शान्ति है। इसके उपरान्त वर्तमान समय में हम अपने जैसी

मानव जाति को जो आदि में सिन्धू कहलाती थी मनुष्य कहने का स्वभाव बन गया। अतएव यदि मैंने भी हिन्दू की बजाय मनुष्य का शब्द अपने विचारों के प्रगट करने में प्रयोग किया है तो क्या पाप किया है ?

हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई, इन ज़ाहिरा शब्दों की टेक रखकर अपने विरोधी दल को हानि पहुँचाने के अभिप्राय से द्वेष भाव के असर से जो जो दुष्कर्म कर रहे हैं, क्या यह कर्म उनके हिन्दुत्व, मुसलमान या सिक्खपन का गौरव है ? प्राचीन काल से हिन्दू धर्म में हर विचार के मनुष्य को वाणी की पूरी स्वतन्त्रता रही है। भिन्न २ विचार और विश्वास के महापुरुष जो हिन्दुस्तान में हुये हैं, अबतक आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। मुसलमान पना, सिक्ख, और ईसाई पना सबके सब हिन्दू या दूसरे शब्दों में सिन्धू या मनुष्य से निकले हैं। मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे सज्जन हठ धर्मी के प्रभाव से इस कदर भड़क गये कि बयान से बाहर है। यदि विशेष व्याख्या की आवश्यकता है, तो मेरे हाल पर रहम करके महर्षि शिव ब्रतलाल श्री महाराज की

प्रसिद्ध पुस्तक "तमाम दुनियां असल व नसल की नज़र से हिन्दू है", का अध्ययन करें। आपके सब संशय दूर हो जायेंगे। अब रहा आपका यह प्रश्न कि मैं न हिन्दू रहा न मुसलमान बल्कि मनुष्य होने का दावा करता हूं। इसका उत्तर यह है कि धर्म का उद्देश्य मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना है। मैंने हिन्दुमत में जन्म लिया और उसने मुझे सच्चा मनुष्य बनाकर मुक्त कर दिया।

To be born in church is a blessing, but to die in a church is a curse.

(मज़हब मैं जन्म लेना अहोभाग्य है मगर उसका पक्षपाती होना पाप है) मेराजीवन भिन्न २ अवस्थाओं से गुज़र चुका है। पहिले ब्रह्मचारी की हैसियत से विद्या पढ़ी। विद्या भी वह जिससे यह बोध हो जाये कि मैं कौन हूं। तत्पश्चात् शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव प्राप्त किया। यह गृहस्थ आश्रम था। कुछ समय बाद जीवन के भोगों से मन उकता गया। यह बाणप्रस्थ आश्रम था। अब उन सब के भूलने अथवा उनसे अलग रहने का

समय आ गया है। यह संन्यास आश्रम है।

जो जिस अवस्था में स्थित होता है उसकी दशा भी वैसी ही होती है और उसी दृष्टिकोण से बातें करने के लिये विवश होता है। सुनो! मनुष्य की बात चीत का आधार तीन प्रकार के ज्ञान से बंधा है :—

(१) प्रत्यक्ष-यह ज्ञान इन्द्रियों द्वारा प्राप्त होता है।

२. अनुमान—यह ज्ञान चित, मन, बुद्धि और अहंकार के सहारे रहता है जो संशयात्मक नहीं होता बल्कि अंत:करण से सम्बन्ध रखता है।

(३) शब्द—यह दो प्रकार का होता है—(१) ऋषियों और महापुरुषों के अनुभव और साक्षातकार के परिणाम (२) वर्तमान ज्ञानियों के अनुभव का परिणाम।

मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी जप तप व अन्य धार्मिक सिद्धान्तों के साधन करने में व्यतीत की है और एक विशेष परिणाम पर पहुंचा हूं। भ्रमात्मिक कल्पनाओं से मुझे कोई सम्बन्ध नहीं है। देश के पतन और भयानक दृश्यों ने हृदय पर चोट पहुंचाई। उसका असली कारण देश के ग़लत और गुमराह

करने वाले विचार हैं। इसका परिणाम स्वाभाविक रूप से यह होना था।

सहानुभूति और दया की भावनाओं ने आग्रह किया। अत: मैंने अपने विचार जो निजी अनुभव पर आधारित हैं प्रगट कर दिये। मैंने जो कुछ इस पुस्तक में लिखा है वह सोलह आने सच है और उस शिक्षा के अनुसार है जो तुम्हारे या हमारे महापुरुषों ने समय २ पर प्रगट की है जिनको तुम हिन्दू कहते हो और मैं मनुष्य या सिन्धू कहता हूं केवल वर्णनशैली भिन्न है। क्या हिन्दू क्या मुसलमान सब के सब मनुष्यता से गिर कर स्वयं अपने विनाश की ओर जा रहे हैं। यदि आप मुझ से सहमत नहीं हैं तो इस में आश्चर्य क्या! विचारों का भिन्न २ होना प्राकृतिक नियम है। मगर क्या वर्तमान डैमोक्रेसी (प्रजातंत्र राज्य) में मेरा अधिकार नहीं है कि मैं देश की उन्नति के लिये अपने विचार प्रकट कर सकूं ? फिर हठ धर्मी के कारण आपके उत्तेजित होने का क्या अभिप्राय! रह गया आपका विचार दाता दयाल जी महाराज के विषय में, तो आपको यह मालूम करने के लिये कि उनकी शिक्षा

क्या थी, अधिक समय लगेगा। नमूना के रूप में उनकी तालीम का एक शब्द जो उन्होंने अपनी अन्तिम आयु के समय में कहा था पढ़िये :—

वतन है हिन्द अपना, इसलिये कहलाते हैं हिन्दू।
न हम मज़हब न मिल्लत, के कभी पैकार में आये॥

मित्र—विदित होता है कि आप मेरी तेज़ी से कुछ नाराज़ हो गये।

फकीर—आपको क्रोध आया और वाह्य प्रभाव मुझ पर पड़ा इसकी प्रतिक्रिया (Reaction) हुई, लेकिन मेरा उत्तर शिष्टाचार के सिद्धान्त का ध्यान रखते हुये था। अच्छा! इस झगड़े को छोड़िये घर बार की कुशलता सुनाइये।

मित्र—सहानुभूति के लिये धन्यवाद, मगर मैं कुछ और कहना चाहता हूं। क्या आप समझाने का कष्ट उठावेंगे ?

फ़कीर—आप दुखी हैं! संकटों से निकल कर आये हो। मुझे आपकी सेवा का ख्याल रहेगा। कहिये ?

मित्र—इस समय हमें अपनी जिन्दगी की चिन्ता

है। देश की हालत दिन ब दिन खराब हो रही है। हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के विरोधी नज़र आते हैं। ऐसी दशा में हमको क्या करना चाहिये।

फ़कीर (पुस्तक देकर) इसमें से यह शब्द पढ़िये। इसमें आपके प्रश्न का उत्तर मौजूद है।

शब्द

बुद्धि जब तुम को मिली, मिल जुल के रहना सीख लो।
द्वेष तज कर प्रेम की, युक्ति का गहना सीख लो॥
भाइयों से बैर त्यागो, मित्रता का भाव लो।
मुख से मीठे और मधुर, वचनों का कहना सीख लो।
लड़ते २ हो गये हो, निबल सोचो यह भी कुछ।
यह दशा अच्छी नहीं, सुमति का लहना सीख लो॥
ऐसा हो व्यौहार जिससे, सुख मिले और शान्ति।
कौन कहता है कि, दुख सागर में बहना सीख लो॥
संत फुक़रा जग में आये, प्रेम का परिचय दिया।
मेल का साधन रहे, मिल जुल के रहना सीख लो॥

मित्र—शब्द ठीक है, मगर मुसलमान तंग करने पर तुले हुए हैं। हर मामले में वह अपना स्वार्थ, लोभ और धर्म का ख्याल रखते हुए काम करते हैं।

फ़कीर मित्र ! ताली दोनों हाथों से बजा करती

है। इसका उपाय (१) मैनिज्म (मनुष्यता) की शिक्षा का प्रचार कि मनुष्य क्या है, कहां से आया और कहां जायगा। सृष्टि क्या है ? कैसे और क्यों बनती बिगड़ती है ? २) गवर्नमेंट मनुष्यों के हाथ में हो नकि हिन्दू, मुसलमान या सिक्खों के बस, इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है।

मित्र—आपका विचार धन्य है ! मगर अमली दुनियां में असम्भव है। कारण कि हिन्दू और मुसलमानों में बुनियाद से ही गहरे मत भेद हैं। जैसे हिन्दू—वर्णाश्रम के अनुयाई हैं, उनके यहां इसका नाम तक नहीं। हिन्दू श्रीराम, व श्री कृष्ण के पुजारी, मुसलमान हज़रत अली व हज़रत मुहम्मद साहब के विश्वासीं है। रस्म व रिवाज, सिद्धांत और नियम एक दूसरे से विलकुल भिन्न हैं। यदि मेल हो तो कैसे हो। वह स्वार्थी और लालची हैं। रह गया सवाल गवर्नमेंट का, यहां डैमोक्रेसी (प्रजातंत्र) है। लोग जिस का चुनाव करते हैं वह उच्च पदवी पाता है। और चुनाव भी धार्मिक दृष्टिकोण से होता है। इसलिये यह भी असम्भव है कि गवर्नमेंट के कार्य कर्त्ता हिंदू और मुसलिमपने से स्वतंत्र

और मनुष्यता के विचार वाले हों । इसलिये आपकी सलाह पर अमल असम्भव है ।

फ़कीर—कुदरत में ग़ैर मुमकिन के भी इमकान का सामान है ।
हो सकता है ग़ैर मुमकिन, मुमकिन गर इंसान इंसान है ॥

असम्भव को सम्भम कर दिखाना मनुष्य की अपनी बुद्धि पर आधारित है । इम बुद्धि को प्राप्त करने के लिये सच्चे मनुष्यों, व निस्वार्थ नेताओं ने, जिन्होंने इस सिन्धु देश में जन्म लिया और सच्चे अर्थों में सिन्धू या हिंदू कहलाते थे, एक उपाय बताया था । शोक है कि उसको प्राणी मात्र ने भुला दिया है और उस बुद्धि से हीन हो गये हैं, जो असम्भव को सम्भव करके दिखादे ।

मित्र—वह उपाय क्या है ?

फ़कीर—वह एक मंत्र है ! सुनो—

ओ३म् भू र्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेणयम भर्गो देवस्य धीमहि धी यो योनः प्रचोदयात् !

प्यारे मित्र ! जब तक मनुष्य जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति की अवस्था से ऊंचा होकर तुरिया अवस्था को प्राप्त नहीं करता, वह सच्ची बुद्धि और

सत्य विचार, जो एक सत् पुरुष की विशेषता होती है, कदापि प्राप्त नहीं कर सकता। जो इस साधन का अभ्यास करते हैं, उनको अपने अंतर में प्रकाश मिलता है और उसकी सहायता से जो अनुभव प्राप्त होता है उसके द्वारा वे अपनी तथा अन्य लोगों की कठिनाइयों का हल सुगमता से निकाल सकते हैं।

यदि आपने इस पुस्तक को ध्यान पूर्वक पढ़ा है तो आपको स्मरण होगा कि मैंने मनुष्य के जीवन को नूर, रोशनी और हरारत प्रगट किया है और उसका भंडार जोति स्वरूप बताया है जो इस माद्दी दुनियां को उत्पन्न करता है। चूँकि लोग इस साधन के, जो इस मंत्र में प्रगट किया गया है अभ्यासी नहीं रहे, इसलिये प्रकृति के भेद से अनभिज्ञ हैं। कुछ लोगों को जिनकी साधन करने की ओर रुचि है, केवल जाप या मंत्र की रट पर ही सन्तोष है। प्राचीन काल में भी जन साधारण इसके अभ्यासी नहीं थे, इसलिये समाज का नियम था कि प्रत्येक जाति या सम्प्रदाय के व्यक्ति किसी ऐसे कुल गुरु या अन्य महापुरुष के उपदेशानुसार जीवन की गढ़त करें, जिसने इस मंत्र को सिद्ध किया हुआ हो या उस अवस्था का अनुभवी हो जो इस मन्त्र में वर्णन की गई है। उस महापुरुष

को कुल गुरु या पुरोहित कहा जाता था। रस्म रिवाज तो अब भी मौजूद हैं मगर सिद्धान्त से अनभिज्ञ और साधन से अपरिचित हैं। केवल लकीर पीटन रह गई है। प्रणाली सदा से चली आई है और रस्म के रूप में अब भी है।

मित्र—बात तो ठीक है। मैंने स्वयं भी सुना है कि जो मनुष्य गायत्री मंत्र को सिद्ध कर लेता है, वह बहुत बड़ा मनुष्य हो जाता है। प्राचीन काल में राजाओं तक के कुल गुरु या पुरोहित होते थे और वे उनकी सलाह से राज काज करते थे। उदाहरण के रूप में चाणक्य ऋषि ने चँद्रगुप्त को सहायता देकर एक सफल शासक बना दिया। मेरी इच्छा है कि आप इस मंत्र की विशेष व्याख्या करें।

फ़कीर—सुनो :—

संस्कृत नाम	व्याख्या	अरबी नाम
ओ३म् भूः	जाग्रत अवस्था, स्थूल पदार्थ, पृथ्वी, इन्द्रियों का विषय	नासूत
ओ३म् भुवः	स्वप्नावस्था, सूक्षम शरीर, मन सूक्ष्म पदार्थ मानसिक विषय	मलकूत
ओ३म् स्वः	सुषप्ति, वेख़वरी, कारण पदार्थ,	जबरूत

जो मनुष्य अपनी तवज्जह (सुरत) को जाग्रत अवस्था, स्थूल पदार्थ या स्थूल जीवन तक ही सीमित रखेगा, उसको जो भी ज्ञान या अनुभव होगा वह सीमित होगा। जो मनुष्य विचार की दुनियां पर शासक हो जाता है, उसकी इच्छा शक्ति (will power) बहुत सूक्षम हो जाती है और वह अपने विचार की शक्ति या आकर्षण शक्ति से बहुत कुछ काम कर सकता है। जो मनुष्य अपनी तवज्जह (सुरत) को समाधि में लेजाकर अज्ञान अवस्था से बच जाता है उसका जीवन आनन्द दायक हो जाता है। जो उस से भी आगे जो सूर्य है उसके दर्शन अपने अन्दर करता है या अपनी नूर रूपी जिन्दगी को देखता है, वह स्थूल, सूक्ष्म और कारण पदार्थ की क्रिया से पूर्ण रूपेण ज्ञाता होकर अपने शारीरिक जीवन को चाहे जिस सांचे में ढाल सकता है। उस अवस्था में वह प्राप्त ज्ञान के द्वारा दूसरों को सच्ची राय दे सकता है।

जितनी खोज बाहरी सांइन्स ने की या भिन्न २ विद्याओं का अनुसन्धान किया उसमें चित की एकाग्रता का सिद्धान्त काम करता रहा है,

जिसका पूर्ण संकेत गायत्री मंत्र में मौजूद है। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या इसाई सब के सब इसी एकाग्रता के सिद्धान्त से, ज्ञात या अज्ञात् रूप से, अपनी खोज में सफल हुये हैं। मगर हिन्दुओं में इसकी नियमानुकूल शिक्षा का प्रबन्ध है। इसी उपरोक्त शिक्षा के आमिल (अभ्यासी) होकर प्राचीन समय के महापुरुष पूर्णता को पहुंचे। हां! यह कहना कि एकाग्रता का प्राकृतिक सिद्धान्त केवल हिन्दुओं के पास ही सुरक्षित है, भूल है। क्योंकि यह प्राकृतिक होने के कारण बिना लिहाज धर्म व सम्प्रदाय, प्राणी मात्र की धरोहर है सूफियों की वाणी और अंजील में भी इसका संकेत है। आमिल इससे भली भांति लाभ उठा सकता है चाहे वह किसी जाति, देश, धर्म या व्यवसाय से सम्बन्ध रखता हो।

मित्र—क्या मैं पूछ सकता हूं कि इस स्थूल रचना से परे का जो ज्ञान है उसके प्राप्त करने का तरीका क्या है?

फकीर—ओ३म् भूः भूवः स्वः महः जनः तपः सत्यम् तत्सवितु र्वरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि धियो

योत: प्रचोदयात् । अर्थात भू भुव: स्व: से आगे मह: जन: तप: इत्यादि अवस्थाओं से परे जाकर उस महान सूर्य के दर्शन करो जो तुम्हारी बुद्धि का प्रेरक हो। उस दशा में जो बुद्धि प्राप्त होती है उसको अनुभव, सार ज्ञान या राज़ हक़ कहा जाता है। चूंकि यह साधन का विषय है और आप इसके अभ्यासी नहीं हैं अत: पूर्ण रूप से न समझ सकेंगे। इसलिये इस पर विशेष वार्ता न की जायगी।

मित्र—आनन्द आ रहा है। कुछ तो व्याख्या कीजिये कि ये लोक इत्यादि क्या हैं ?

फ़क़ीर—भू, भुव: स्व: के विषय में तो मैं पहिले बता चुका हूं कि यह उस पदार्थ के लोक या अवस्थाएं हैं जिस से स्थूल शरीर और विचार की दुनियां बनी हुई है। उससे आगे हस्ती (अस्तित्व) के जो दर्जे हैं उनका नाम मह; जन; और तप: इत्यादि रखे हुए हैं। जब मनुष्य की तवज्जह (सुरत) शारीरिक और दिली संकल्प विकल्प को भूलकर अपनी नूर रूपी जिन्दगी से ऊपर जाती है तो वहां वास्तविक जीवन या हस्ती का केवल अनुभव करती है।

जिस जगह इंसानियत, हैवानियत और मलकूनियत काफूर हैं।
क्या कहूँ वह क्या है हालत, कलम वो जवां मजबूर हैं ॥
अमल का उससे है ताल्लुक इल्म का नहिं वास्ता।
मैं नहीं, सारे ही आमिल, इजहार से मजबूर हैं ॥

मित्र—अहा हा हा ! इस समय आप का मुख और आंखें विशेष प्रकार के तेज से परिपूर्ण दृष्टि गोचर हो रही हैं और आप के शरीर से एक गुप्त आकर्षण शक्ति की धारें निकलती हुई अनुभव हो रही हैं।

फ़कीर—इस समय उस दशा के, असर का जिसका मैंने अभी जिकर किया है मेरे शरीर और विचार से इज़हार हो रहा है। सोचो ! जिन महा पुरुषों ने अमली जिन्दगी के अनुभव के वाद यह मंत्र

मनुष्य को प्रदान किया है क्या वह हिन्दू, मुसलमान, ईसाई या जाति पांति के झमेलों में रह सकते थे, बस ! अब आप पधारिये। मेरी दशा कुछ ऐसी है कि बयान नहीं कर सकता।

———

राधास्वामी।

दयाल दर्शन

लेखक : कुबेर नाथ श्रीवास्तव

इस संसार में जब से मैंने होश सम्भाला मैं देखने लगा कि एक जन्म लेता है तो दूसरा मर जाता है, अगर जन्म लेता है तो मर क्यों जाता है, मर जाता है तो जन्म क्यों लेता? यह क्या तमाशा है? इससे मुझे यह प्रतीत होने लगा कि यह संसार एक सराय है। यहां मुसाफिर ठहरते हैं और जहां से आते हैं वहीं चले जाते हैं। मुझ में इस बात की लालसा दिन प्रतिदिन बढ़ती रही कि मनुष्य कहां से जन्म लेता है और मर कर कहां जाता है, मैं कहां से आया हूं और मर कर कहां जाऊँगा। मेरी आत्मा साक्षी देती थी कि मैं यहां का बासी नहीं हूं किसी और देश का बासी हूं जहां से आया था वहीं जाना है और वहीं जाकर चैन लेना है इसका समर्थन फारसी के एक कवि ने इस प्रकार किया है।

लो शोले की सूर्य आसमां है।
पानी तहे खाक को रवां है॥

समुन्द्र का पानी भाप बनकर मौनसून के रूप में पहाड़ से टकराता है और पानी बन कर नदी में बह चलता है। वह बराबर बहता रहता है जब तक कि वह फिर समुन्द्र में न मिल जाये। जब वह समुन्द्र में मिलता है तभी उसको शांन्ति प्राप्त होती है। अग्नि आकाश से पैदा होती है इसी कारण इसकी लौ आकाश की ओर जाती है और वह आकाश से मिल कर शान्ति प्राप्त करती है पानी और अग्नि से तो उसकी प्रलय और उत्पत्ति का पता चलता है कि पानी समुन्द्र से पैदा होता है और उसी में समाकर अपने अस्तित्व को समुन्द्र बना देती है तथा अग्नि की भी यही दशा है कि आकाश से प्रगट होकर आकाश में ही समाकर आकाश बन जाती है मगर हमारी उत्पत्ति और प्रलय का पता नहीं चलता है।

ज्यों २ हमारी चैतन्यता बढ़ती गयी किसी को राम किसी को रहीम कहते सुना, सोचने लगा यह लोग क्या कहते हैं। मुझको यह ज्ञात हुआ कि यह लोग जिस स्थान को खोज रहे हैं उसका नाम ले रहे हैं। क्या ये लोग उस स्थान को देख रहे हैं ? नहीं,

वह देख नहीं रहे हैं मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि वे देखा देखी भेड़िया घसान की चाल चल रहे हैं।

एक हिन्दू का लड़का अपने पिता को राम २ कहते चोटी रखे और मन्दिर में पूजा करते हुए देखकर यह अनुभव करता है कि ऐसा करने से उसके पिता को लक्ष्य की प्राप्ति हो गयी है या हो जायेगी और वह लक्ष्य को समझ बूझ गया है और भलिभांति उसका प्रयोग कर सकता है। वह उसका अनुयायी हो जाता है। तथा एक मुसलमान का लड़का अपने बाप को अल्लाह २ कहते, दाढी रखे और मसजिद में नमाज पढ़ते देखकर उसका अनुयायी बनकर वही बात समझने लगता है जो एक हिन्दू का लड़का समझता है। चूँकि हिन्दू और मुसलमान दोनों बिना लक्ष्य को जाने बूझे बिना समझे तथा देखे राम राम और अल्लाह २ कहते हैं वही दशा उनके लड़कों की भी होती है और लक्ष्य से दूर रहते हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों के लड़के अपने लक्ष्य से बिचलित हो गये दोनों का लक्ष्य एक ही था परन्तु हिन्दू ने अपना लक्ष्य दूसरा और मुसलमान ने अपना लक्ष्य दूसरा समझा। दोनों बजाये लक्ष्य प्राप्त करने के

कट्टर और संकीर्ण बन गये। एक दूसरे को गलत समझने लगे और धर्म के नाम पर यह कहावत ठीक निकली कि :—

"रुई न सूत जुलाहों में धक्कम-धक्का"

धर्म के नाम पर लड़ाई झगड़े आरम्भ हो गये और खून की नदी बहने लगी। बात कहां से कहां चली गयी। दोनों चले थे कि हम लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे और संसार में शान्ति फैलायेंगे। इसके प्रतिकूल लक्ष्य को न समझकर अशान्त बन गये ऐसा क्यों हुआ क्योंकि एक भूला हुआ (गुमराह) दूसरे के भूले हुए रास्ते पर चलने लगा हमको ऐसा मालूम होने लगा कि राम को न तो हिन्दू देखता है व जानता है और अल्लाह को न मुसलमान देखता व जानता है और बिना देखे हिन्दू और मुसलमान राम और रहीम के अनुयायी होकर रट लगा रहे हैं जैसे बिना निशाने के कोई हवा में तीर मारता है और यह नहीं देखता कि उसके तीर मारने से कौन शिकार हाथ आता है। हमारे इस विचार की पुष्टि कबीर साहब ने इस प्रकार की है :—

पँडित वाद वेद से झूठा।
राम के कहे जगत तर जाई, खाड़ कहे मुख मीठा॥

पावक कहे पाव जो जरई, जल कहे तृष्ना बुझाई ॥
भोजन कहे भूख जो भागे, सब दुनियां तर जाई ॥
नर के पास सुवा आई बोले, गुरु परताप न जाना ॥
जो कबहि उड़ गये जंगल में बहुरि सुरति नहीं आना ॥
विन देखे विन दरस परस विन, नाम लिए का होई ॥
धन के कहे धनी जो होई निरधन रहे न कोई ॥
साची हेत विषय माया से सत्तगुरु शब्द की हासी ॥
कहे कबीर गुरु के बेमुख बांधे यमपुर जासी ॥

हिन्दू मुसलमान व अन्य पंथाइयों का तो वही हाल हो गया कि चले थे तो अमृत की खोज में परन्तु उनको मदिरा मिली और मदिरा को ही अमृत समझकर प्रसन्न हो गये और बजाये सुर होने के असुर हो गये ।

अपने आदर्श का नाम जो जी में आये रखो आदर्श तो आदर्श है । उसका नाम क्या रखोगे ? कहने को उसका नाम कुछ भी रख लो परन्तु उसका ध्यान रखो और उससे विचलित न होवो । नाम पर मत जाओ इसके प्रतिकूल पंथाइयों की दशा देख कर मैं दुखी रहने लगा और इस खोज में पड़ गया कि कोई ऐसा पुरुष मिलता है जो आदर्श को प्राप्त किये हुए हो और उसको जानता पहचानता और काम लेता हो चाहे अपने आदर्श का नाम राम रहीम

या अन्य किसी नाम से सम्बोधित करता हो पंथायी नाम तो अवश्य लेते हैं मगर न तो नाम को जानते पहिचानते और नहीं उससे काम लेने की युक्ति रखते हैं।

मैं चाहता था कि जो मनुष्य उस सच्चे मालिक का नाम लेता है तो उस नाम के द्वारा उस सच्चे मालिक का प्रभाव उस पर पड़े। इस राम और रहीम कहने वालों का प्रभाव मेरे ऊपर तो कुछ नहीं पड़ता। प्रकृति प्रत्येक काम के करने और कराने में कुशल है। प्रतिबन्ध यह है कि किसी में अपने कार्य के करने की तीव्र इच्छा व लगन हो। तुम कहते हो कि मांग और पूर्ति (Demand and supply) का नियम सरल है। नहीं, ऐसा नहीं है। पहले पूर्ति होती है, तब मांग का प्रश्न उठता है क्योंकि प्रकृति बड़ी दयालु है पहले वह पुर्ति का प्रबन्ध कर लेती है तब मांग का प्रश्न पैदा करती है। गाय के थन में पहले दूध का प्रबन्ध हो जाता है तब वह बछड़े को जन्म देती है इसका समर्थन फारसी के एक कवि ने इस प्रकार किया है :—

इश्क-इश्क अव्वल दर्द दिले मासुम पैदा की शवद।
यू न सोजद शमा कै परवाना सौदा की शवद।

इसका का अर्थ यह है कि प्रेम पहले प्रीतम से पैदा होता है इसके बाद वह प्रेमी में प्रवेश करता है। क्यों कि जब दीपक स्वयं प्रेम से जलने लगता है तब पतंगे प्रेमी के रूप में जलने के लिए आते हैं इसको तुलसी दास जी इस प्रकार वर्णन करते हैं

चाहे किन करावे सोई उमा यह गति जाने कोई कोई ॥

जैसे बछड़े के जन्म लेने के पहले प्रकृति गाय के थन में दुध का प्रबन्ध कर देती है वैसे ही विद्यार्थी में विद्या की इच्छा प्रगट होने से पहिले ही, पुस्तक विद्यालय व शिक्षक का प्रबध प्रकृति पहले से ही पैदा कर रखती है।

रोगी में रोग का उपचार होने से पहले ही वैध व औषधि पैदा कर रखती है। दाता दयाल की लिखी हुई पुस्तक जिसका नाम विज्ञानी है और उस समय मासिक पत्रिका के रूप में लाहौर से प्रकाशित होती थी उसको हमारे चाचा मंगाया करते थे और प्रेम पूर्वक पढ़ा करते थे। वह उसको समझने में और उस समझ से काम लेने में कहां तक सफल हुए मुझको इसका पता नहीं। उस समय मैं कक्षा चार में पढ़ता था। उनके देखा देखी मैं भी पुस्तक पढ़ी

लगन से पड़ा करता था। हमारा हृदय इसका साक्षी देता था कि दाता दयाल ने उस मालिके कुल का नाम राधास्वामी रखा है और इसी से इसको सम्बोधित करते हैं। और इसी नाम द्वारा मालिके कुल या लक्ष्य का प्रभाव सुनने वाले पर पड़ता है परन्तु इस नाम का लक्ष्य क्या है? अगर इस लक्ष्य की प्राप्ति मुझे कण भर भी हो जाती तो हमारी सब कामनायें चाहे वह सांसारिक हों या पारमार्थिक हों वह पूरी हो जावेंगी और मैं उससे इतना तृप्त हो जाता कि कोई भी लालसा तृप्त होने से वंचित न रह जाती तथा मेरी प्रत्येक खोज समाप्त हो जाती। विज्ञानी के पढ़ने से मुझे यही बात मिली परन्तु मेरे लक्ष्य की प्राप्ति की कोई बात नहीं मिली। बड़े सोच विचार के बाद मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि जब तक दाता दयाल का दर्शन नहीं होगा यह बात असम्भव है।

दाता दयाल तो लाहौर में रहते हैं वह बड़े आदमी हैं हमारा उनका मिलना असम्भव है परन्तु उनसे मिलने का विचार हमारे हृदय से नहीं गया।

'विज्ञानी पत्रिका' में सन 1920 में यह प्रकाशित

हुआ कि दाता दयाल लाहौर छोड़कर अपने धाम गये हैं तथा उस पर उनका चित्र भी था। मैं उनका फोटो देखकर तथा यह बात पढ़कर प्रसन्न हो गया और उनसे मिलने की आशा झलक उठी क्योंकि राधास्वामी धाम इलाहाबाद और बनारस के बीच स्थित है और मैं बलिया का निवासी हूं जहां से राधास्वामी धाम 100 मील लगभग होगा।

मैं उनके दर्शन हेतु मई सन् 1920 में राधास्वामी धाम गया और उनको नमस्कार किया तो उन्होंने राधास्वामी कहा जिसको सुनकर मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि जो राधास्वामी नाम ले रहे हैं वह उनके लक्ष्य का नाम है वह अपने लक्ष्य को देखते हुए समझते बूझते हुए और उससे काम लेते हुए राधास्वामी नाम द्वारा मुझपर प्रगट कर रहे हैं उनका लक्ष्य वही है। जिसकी प्राप्ति की लालसा मुझे यहां ले आयी है।

इसके बाद जब वह राधास्वामी नाम लेते तो मुझे यह प्रतीत होता था कि जैसे कोई बर्तन ज्यों २ मला जाता है त्यों २ चमकने लगता है। वैसे ही मैं ज्यों ज्यों उनके मुख से राधास्वामी नाम

सुनता त्यों २ मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि जो वह राधास्वामी कहते हैं तो उसका प्रभाव मेरे हृदय पर पड़ता है और हमारे हृदय का प्रभाव कुछ न कुछ निकल कर उज्जवल रूप धारण करता जाता है। उनके राधास्वामी नाम कहते और मुझको सुनते ऐसा मालूम होता था कि उनके मुख से हमारे लक्ष्य की झिनी २ सुगन्ध प्रवाहित हो रही है। जिससे हर प्रकार के दुखों से छुटकारा दिलाकर शान्ति प्रदान करती हुई प्रतीत होती है परन्तु वह सुगन्ध किस स्थान से आ रही है इसका पता लगने की मुझे तीब्र इच्छा बढ़ती गयी मैं उस स्थान पर पहुंच जाता तो अचिन्त हो जाता चूँकि इनको दयाल लोक का आनन्द प्राप्त है इसी कारण लोग इनको दाता दयाल कहते हैं।

उन्होंने पूछा तुम यहां कैसे आये ? मैंने कहा कि आपके दर्शन हेतु। उन्होंने पूछा हां दर्शन के हेतु अवश्य आये मगर कुछ पूछना है ? मैंने कहा हां। उन्होंने कहा क्या ? मैंने कहा आदर्श क्या है इसकी प्राप्ति कैसे होती है मुझे क्या करना चाहिए ? उन्होंने कहा तुम्हारे प्रश्न तो बड़े अच्छे हैं इसका उत्तर शाम को सत्संग में दूंगा।

क्रमश:

शिव देव राव शिशु शिक्षा केन्द्र

मानवता मन्दिर में शिवदेव राव शिशुशिक्षा केन्द्र का उद्घाटन 4-11-79 प्रातः सात बज कर 10 मिन्ट पर होगा। मैं अपने जीवन पर नज़र डालता हूं। अपने आप से पूछता हूं कि तू तो राम को मिलने के लिये निकला था और अब मन्दिरों, शिशुकेन्द्रों, प्रैसों और हस्पतालों में फंस गया। मैं इस को मौज समझता हूं या अपने कर्म समझता हूं।

डाक्टर राम देव राव, जो अमरीका में रहते हैं, दो बर्ष हुए मैं वहां गया था, उन के लड़का नहीं था, वह मेरे पास आ कर दोनों पति पत्नी रोने लगे कि लड़का नहीं है। उन की हालत को देख कर मेरे मुंह से निकल गया, तुम्हारे लड़का होगा, उस का नाम शिव देव राव रखना। लड़का हो गया, उन्होंने साढ़े चुहत्तर हज़ार (74500) रुपया मानवता मन्दिर को दान के रूप में भेजा। सरकार के आयकर नियमानुसार हमें जो पैसा दान के रूप में आता है उसको उसी साल में खर्च करना जरूरी है नहीं तो सब रुपया सरकार ले जाती है। इस लिये विवश हो कर शिव देव राव के नाम से प्रैस और

शिशु शिक्षा केन्द्र मैं ने खोला। इस पर डेढ़ लाख से अधिक खर्च हुआ, अभी भी पूरा नहीं बना। मैं बीस बाईस बालक स्कूल में दाख़ल कर के, कोई फीस नहीं लूंगा, केवल रिक्षा का कराया अगर वे उस पर आयें तो उन को देना पड़ेगा।

मन्दिर, शिक्षा केन्द्र, हस्पताल प्रैस या मकान बनाने में अध्यात्मिकता नहीं है यह तो दुनियां में जीने का एक तरीका है और हर जगह होना चाहिये। मैं इसवास्ते लिख रहा हूं कि कोई यह न समझे कि जहां रूहानी गुरूओं ने यह स्कूल, अच्छे काम हस्पताल आदि खोले हुए हैं वहां रूहानियत का कोई काम है। बिलकुल नहीं यह तो संसार का व्यवहार है। मैं ने फीस न लेने का इस लिये निर्णय किया है कि यदि यह काम व्यापार के नाते से किया गया तो जिन्होंने दान दिया है उन को कोई लाभ नहीं पहुंचेगा, हां अगर कोई सज्जन खुशी से स्कूल या प्रैस में सहायता करना चाहे तो वह जो इच्छा हो फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट के नाम चेक् ट्री मानवता मन्दिर को भेज सकता है।

जब तक मैं इस काम को कर सकूंगा कर दूंगा

नहीं तो बन्द कर दूंगा।

अब मन्दिर वाले यह चाहते हैं कि शिव देव राव शिशु शिक्षा केन्द्र में बच्चों को शुभ संस्कार देने के लिये प्रति दिन प्रात: नीचे लिखा भजन पढ़ा जाये :—

1. हम सब बालक, प्यारे मालिक, तेरी महिमा गायेंगे,
भले, स्याने, सुगुरे बन कर, मानवता अपनायेंगे।
2, मानवता है शान बड़ाई, सारी मानव जाती की,
काम करेंगे अच्छे जग में, देश का मान बढ़ायेंगे।
3. मात पिता की सेवा करके, भाई बहन से प्यार,
प्रेम का जीवन काटेंगे और घर को स्वर्ग बनायेंगे,
4, मानवता ही धर्म है सच्चा, मानवता ही पंथ,
इसी राह पर चल कर हम भी, मानवता फैलायेंगे।
5. मानवता की शिक्षा क्या है, मानवता का ज्ञान,
मानवा के ज्ञान को पाकर, मानव पदवी पायेंगे।
6. यह शिक्षा इस युग की शिक्षा, दी है संत फकीर,
इस शिक्षा को पाकर मालिक, हम तेरे बन जायेंगे।

चुनाव

चुनाव आ रहे हैं। मेरे पास हर पार्टी के आदमी आयेंगे कि बोट हमें दो। आज विचार आया कि मेरी इन्सानियत की शिक्षानुसार वोट का कौन अधिकारी है। सोचा, हिन्दू धर्म, चरित्र सम्बन्धी और रुहानी मार्ग के अनुसार जो लडका या ईन्सान अपने मां बाप का अपमान करता है, गुरु का अपमान करता है, और हाकिम (आफीसर) की बेइज्जती करता है, मेरी ज़मीर ईजाजत नहीं देती कि उसको बोट दिया जावे। मैं फकीर हूं, प्रकृति का थोड़ा सा भेद जानता हूं। जो बुजुर्गों का अपमान करते हैं क्या वह कौम फल फूल सकती है ? अगर हिन्दू शास्त्र या संतमत की शिक्षा जिसका मुख्य उद्देश बा अदब रहना है, ठीक है तो अपने आप से पूछता हूं कि किस को बोट दूं ? अगर ऐसी सँस्था को बोट देता हूं जिन्होंने यह काम किया है तो मैं इन्सानियत के धर्म से गिर जाता हूं। इसलिए

मैं यह चाहता हूं कि ऐसे देश में रहना ही पाप है यहां मां, बाप, गुरु या हकूमत के द्रोही हों। सच्चे दिल से चाहता हूं कि अब इस भारतवर्ष से चला जाऊँ। धर्म गया, कर्म गया, इन्सानियत गई, इन कुरसियों के लिए हम लोगों ने पृथक पृथक पार्टियां बनाकर अपने आपको मिनिस्टर, चीफ़मिनिस्टर, एम. पी. बनाने के लिए क्या कुछ हेरा फेरी नहीं की। तबीयत उदास है। मुझे भारत का भविष्य अच्छा नज़र नहीं आता, कलयुग है, ऐसा होना ही है। अमन पसन्द नेक आदमियों को कोई पूछता नहीं। बस, सच्चे दिल से चाहता हूं कि ऐ दाता ! मुझे ऐसे देश में क्यों जन्म दिया था जहां जाती लालच और मतलब के लिए जुलम और सितम होते हैं। अगर जीवित रहा तो मैं किसी को भी बोट नहीं दूंगा।

आपका

फकीर

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो ! बचपन से किसी चीज़ की तलाश थी, जिस को मैं मालिक या राम समझता था, मौज एक दृश्य द्वारा सन् १९०५ ईसवी में हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव बृत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज़ की तलाश थी उसको पाने में तिरानवें साल का हो गया। अब वह चीज़ क्या निकली ? वह एक अवस्था है जहां मैं अपनी हस्ती को, हैपने को भूल जाता हूं। जो कुछ बाकी रह जाता है उसको ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल, अबल: अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था जिसे आज उनतालीस

साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैंने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरु आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैंने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैंने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आजकल प्रकाशत होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशन मन्दिर से होता है उसका मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बड़ रहीं हैं। इस लिये मैं हाथ बांध कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो यूहिं किताबें मंगवाकर, क्योंकि ये मुफ्त मिलती हैं, मंन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जोकि निम्नलिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਂਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans.
2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity.
10. Jeewan Mukti. 11. Art of happy living.
12. Key to Freedom. 13. Broadcast of Reality in America.

जिन को जरूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इस लिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैंने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, सामाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों की साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह

उसी साल में खर्च करना पड़ता है इसलिये मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुए हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिए आते हैं। इसलिये अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह बिनती अवश्य करूंगा, कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध कर के लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तला थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मै भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामी में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदा सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। खण्डनसहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण कि कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी ने काम दिया था। तुम ही सोचो राधा

वालों की किताबों में संतो की इतनी बड़ाई लिखी हुई
है कि वह ईश्वर, परमेश्वर के पैदा करने वा
बस, इसी एक राज़को जानने के
अपना जीवन खो दिया कि संतम
क्या चीज़ है जो ईश्वर और प
करने वाले समझते हैं। ह
पर से मेरा विश्वास तो
देती थी। इसलि
आयेर

बन

पर स

नहीं।

के लिये ल.

त में समा जा

ADDRESS

1283 Sh. A
H.
H.

श
रा
मित
त या
आत्मा
क्या था
महाराज
वामीमत